आशा-दिशा





चन्द्रनाथ मिश्र, अमर

आयुष्मान् श्री ओमप्रकाश को सस्नेह -

श्री अमर

७।४।६५

नवरत्न ग्रन्थमालाक ३१म पुष्प

आशा-दिशा

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

नवरत्न-गोष्ठी
मिश्रटोला, दरभंगा।

बिहार राज्य साहित्यकार कलाकार कल्याण कोषसँ साहाय्य प्राप्त

आवरण—श्री उदयकान्त चौधरी

थम संस्करण—१००० वसन्त पञ्चमी १९७५ ई०

पुस्तक प्राप्ति स्थान—
नवरत्न गोष्ठी,
मिश्रटोला, दरभङ्गा

मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन
मिश्रटोला, दरभङ्गा

एम्० एल्० एकेडमी,
लहेरियासराय

मुद्रकः—पंचायत प्रेस, लहेरियासराय, दरभंगा।

मूल्य—शोभन-संस्करण—१०.००
साधारण— ७.००



कवि–परिचय

चिर–परिचितक परिचय की देल जाय ? कुसुमायुधकेँ कुसुम की चढ़ाओल जाय ? दिनकेँ देखबालेल दीप की ? इन्द्रधनुषी रेखापर रंग टीप की ?

दू दशक पूर्व 'वीरकन्या' उपन्यासक भूमिकामे श्रीअमरजीक परिचय प्रसंगक पंक्ति थिक—'कौलिकरोँ वैयाकरण, वृत्तियेँ शिक्षक, रुचिएँ कवि एवं साधनेँ पत्रकार ओ परिमार्जित शैलीक लेखक—अमरजीक परिचय एक वाक्यमे यैह देल जा सकैछ।' आब पुनि ओहि मिथिला-मैथिलीक क्षितिज पर पूर्वोदित चन्द्रक कलावंकिमा जखन आइ पूर्णिमाक प्रौढ़िमा प्राप्त कय चुकल अछि तखन एक नहि अनेकहुँ, वाक्य नहि, महावाक्यहुमे परिचय अपूर्ण होयत। वस्तुतः यथार्थनामा चन्द्रक अमर रश्मिसँ मैथिलीक वर्त्तमान साहित्य सनाथ अछि। रचनात्मक दिशासँ साहित्यिक सन्धान-उपस्थान धरि अमरचन्द्रक प्रतिभा-प्रभा स्वयम् उद्भासित अछि।

मिथिला-मैथिलीक एहन कोन आन्दोलन अछि जकर अग्रपंक्तिमे अमरजी नहि देखल गेल होथि ? साहित्यिक सामाजिक एहन कोन संस्था-आस्था अछि जाहिमे अमरजीक व्यक्तित्त्व नहि चमकैत हो ? काव्य-कलाक एहन कोन विधा अछि जतय अमरजी नहि बिम्बित होथि ?

गद्य-पद्य, नाटक-एकांकी, उपन्यास-लघुकथा, व्यंग्य-विनोद, निबन्ध-आलोचना, संस्मरण-सर्वेक्षण— साहित्य-शतदलक प्रत्येक दलपर अमरजीक रमणीयता सुरभित भेटत। जहिना लेखन तहिना वाचन, जहिना सम्पादन-प्रकाशन तहिना प्रचारण-प्रसारण, जहिना शोध-सन्धान तहिना संग्रहक-संकलन—प्रत्येक समकोणक द्विभुज समतूल अछि। जतबे कलम चलित-बलित ततबे वचनहु ललित-कलित, यद्वत् सभा-सम्मेलनक मंच तद्वत् रूपचित्रक रंगमंच, यथैव परिचर्चा विद्वद्गोष्ठी-तथैव गाम घरक गपगोष्ठी, जहिना पत्र-पत्रिकाक स्तम्भ-कालम तहिना कथालापक प्रसर-अवसर, सबतरि एहि तेजस्वी साहित्यिकक व्यक्तित्व प्रखर-भास्वर।

बुझि पड़ैछ, मैथिलीक नवीन कालखंडमे कवीश्वरचन्द्रक प्रतिभा-प्रसाद, अपन विद्वान पिता पण्डित मुक्तिनाथमिश्रजीक पुण्य-प्रभाव, शैशव अभिभावक राजपण्डित बलदेवमिश्रजीक मुखर पाण्डित्य, गुरु पण्डित त्रिलोकनाथमिश्रजीक व्यंग्य-रंग एवं अपन वरिष्ठ शिक्षक अभिभावक श्रीझिंगुरकुमरजीक कर्त्तव्यनिष्ठाक समवेत ज्योति एहि नमछड़-छड़हर श्याम-अभिराम प्रतिभा सनाथ चन्द्रनाथक अमर कलेवरमे अखण्डरूपें उद्द्योतित अछि।

वसन्त पंचमी,
१९७५ ई०

प्रो० श्रीसुरेन्द्र झा 'सुमन'
मैथिली-विभागाध्यक्ष
चन्द्रधारी मिथिला कालेज, दरभंगा

अनुक्रम

दू शब्द

'आशा-दिशा' मैथिलीक वरद पुत्र श्रीअमरजीक सशक्त लेखनीसँ निःसृत कतिपय मुक्तक काव्य-रचनाक संग्रह थीक। मिथिला, भारत आ मानवताक गौरव-रक्षा हेतु कवि समस्त समाजक आह्वान करैत छथि। शान्ति, अहिंसा, प्रेम आ पूजाक सूत्रसँ निर्मित मिथिला आ भारत भूमिक ज्ञान-सम्मत परम्परा आ इतिहासक प्रति सम्मान आ आसक्ति रखितहुँ एहि युगक समस्या सभक प्रति कविक दृष्टि सर्वतोभावेन प्रगतिवादी छैन्ह—यैह एहि संकलनमे सौन्दर्य स्थापित कएलक अछि। शान्तिक रक्षालेल चिन्तित कवि दनुजताक दमन हेतु विशेषरूपसँ भारतपर चीनक आक्रमण आ बंग देशीय समस्याक सन्दर्भमे 'निःसंकोच लिखैत छथि जे "सृष्टिक समस्याक अन्तिम समाधान युद्ध मात्र होएत।" दिनानुदिन घटैत मानवमूल्य आ बढ़ैत विज्ञानक विभीषिकाकेँ देखि कविकेँ सृष्टिक नियन्तेकेँ कांके पठयबाक आवश्यकता बूझि पड़ैत छैन्ह तऽ स्वाभाविके।

आशा अछि 'आशा-दिशा' त्रस्त समाजकेँ निर्माणक नवीन दिशा दर्शाओत आ मैथिलीक सुधी पाठकमध्य समादृत होएत। श्रीअमरजीकेँ एहि कृति लेल अनेक साधुवाद।

—डॉ० श्रीमदनेश्वरमिश्र

२१-१-१९७५ ई०

कुलपति

मिथिला विश्वविद्यालय

दरभंगा

कहबाक अछि जे ... .

प्रस्तुत संकलनकें प्रकाशित करबाक पाछाँ एक इतिहास अछि। १९७३क जूनमे एक ठाम विद्यापति पर्वमे सम्मिलित भेल छलहुँ। ओतय एक कृपालु श्रोताकें प्रायः हमर रचना वेसी प्रिय लगलनि। फलतः हजार टाकाक सम्पत्ति वला सूटकेशकें छोड़ि सय-पचास टाकाक वस्तुवला हमर अटैची दिन-देखार आवाससँ चोरा कऽ लऽ गेलाह। ओहिमे मूल सम्पत्ति छल सम्पूर्ण कविताक कापी।

चोरीक बाद घोर चिन्ता भेल। एक वर्ष धरि उकट पुकट कयलाक बाद पुरान पत्र-पत्रिका ओ अपन रफ कापी सभमे अधिकांश रचना भेटि सकल। एहिमेसँ दुइ चारिगोट रचनाक अतिरिक्त शेष सभ रचना 'ऋतु-प्रिया (१९६३)क प्रकाशनक बादे लिखल गेल अछि आ पटना आकाशवाणीसँ प्रसारित भऽ चुकल अछि।

कविताक कापी हेड़यबाक ई दोसर-घटना छल हमरा जीवनमे। पहिल बेरमे तँ शतावधि हिन्दी कविता ओ शतावधि उर्दू शेर सेहो संकलित छल। ओहिमे सँ किछुए रचना जे प्रकाशित छल से प्राप्त भऽ सकल, शेषसँ हाथ धोअऽ पड़ल। तें दोसर बेरक घटना बेसी चिन्तित कऽ देलक।

एमहर कागतक दुष्प्राप्यता आ छपाइ आदिक महार्घता प्रकाशनक दिशामे डेग उठयबाक साहस नहि होअऽ दैत छल। धन्यवाद दैत छिऐनि विहार-राज्य-साहित्यकार-कलाकार-कल्याण-कोष-समितिक समस्त अधिकारी लोकनिकें जे आंशिक सहायता दऽ प्रकाशित करवाक साहस देलनि।

आभारी छिऐनि मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक कुलपति माननीय डॉ० श्रीमदनेश्वरमिश्रक जे सम्पूर्ण पोथीकें पढ़ि, दू शब्द अपन अमूल्य विचार लिखि, एहि पुस्तकक गौरव-वृद्धि करबाक अनुकम्पा कयलनि।

श्रद्धेय आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन'जीक प्रति, आभारो प्रकट करब धृष्टते होयत। कारण हुनके सत्प्रेरणा तँ साहित्य-साधनामे निरत रखने रहल अछि। मित्रवर श्रीउदयकान्त चौधरीकें धन्यवाद देब नहि बिसरि सकैत छिऐनि जे आवरण दऽ एहि पोथीकें अलंकृत कयलनि अछि।

प्रेसक दोष एवं दृष्टि-दोषसँ बचबाक प्रयत्न करितो कतहु कदाच अशुद्धि रहि गेल यथा भूभागक स्थानपर भूगागक छपि गेल। एहन त्रुटिक हेतु क्षमा याचनाक संग सुधी पाठकक विवेक पर निर्भर रहब।

अन्तमे शिष्या सुश्रीललिताकें आशीर्वाद दैत छिऐनि जे एकर प्रेसक हेतु पाण्डुलिपि तैयार कऽ देलनि आ संगहि साधुवाद दैत छिऐनि पंचायत प्रेसक व्यवस्थापककें जे समयपर एकर प्रकाशन कऽ संकल्पपर दृढ़ रखलनि। किमधिकं विज्ञेषु।

१६ फरवरी १९७५ ई०　　　　श्रीअमर

समर्पण

जन्म
पौष शुक्ल द्वादशी
१२७८ साल



मृत्यु
चैत्र पूर्णिमा
१३५४ साल

ओमद्य पौषे मासि शुक्ले पक्षे द्वादश्यां तिथौ
वत्सगोत्रः पिता मुक्तिनाथ शर्मा
एष काव्यांजलिस्तस्मै स्वधा

जय गण भारति !

जन-मन-हारिणि जय गण-भारति !
सातो स्वरमे बाजय
सोनक आखरमे लिखि पाँती
नवयुग आङन साजय
मुक्त भेल नहि केवल मानव,
मानवता से संगे
जकर चरण-ध्वनि कलकल करइछ
उच्छल जलधि तरङ्गे
अन्तर्नयन फुजल, जग जागल,
जूझल जन बड़भागी
अरपल तन-मन-प्राण सहित कत
छल दलितक अनुरागी

तकरे चरण-चिह्नपर चलइछ
युगक मनक अभिलाषा
दिन दिन अन्तर्बल बढ़इत अछि
बढ़इछ सूतल आशा
जय स्वतन्त्रते ! मुक्तिदायिनी
जन-जन-मनमे जागू
रणचण्डी छथि हाथ जोड़ि कय
ठाढ़ि अहींकेर आगू
जन्मत जन-मत नमत अहिंक लग
बड़बड़ भाग्य-विधाता
जय स्वतन्त्रते ! शान्तिदायिनी
गाबथि भारतमाता
हरखक नोरें चरण पखारथि
पुलकित शिशरक रानी
जय स्वतन्त्रते ! गरजि रहल छथि
पर्वतराज हिमानी
बदलि रहल अछि जगतक कणकण
बदलत सभ परिभाषा
जय स्वतन्त्रते ! गर्जन-ध्वनि सुनि
भागल मनक निराशा
घर घर मानव गाँथि रहल अछि
शान्ति-सुमनकेर माला
जय स्वतन्त्रते ! पजरि उठय नहि
जगमे युद्धक ज्वाला

●

मिथिला गौरव

चलू लेखनी ओहि भूमिमे
जतय छला राजर्षि विदेह
होइत सदेह विदेह कहौलनि
कर्मयोगसँ राखि सिनेह
गीतामे भगवान कृष्णकें
लेबऽ पड़लनि जनिकर नाम
जनिक पुण्यबल जगत विदित
युगयुगसँ अछि ई मिथिला धाम
जतय धरित्री पुत्री पौलनि
पतिव्रता सीताक समान
तकनहु भेटि सकय नहि जनिकर
त्रिभुवनमे दोसर उपमान
ब्रह्मज्ञानी याज्ञवल्क्य ऋषि
लेल हजारो गाय हँकाय
भरल सभामे तकिते रहला
समुपस्थित पण्डित समुदाय

स्वयं शंकराचार्य जतय
भारती संग कयलनि शास्त्रार्थ
भेल अनन्वय उपमाऽलङ्कारो
जनिका लगमे चरितार्थ
मण्डन-प्रिया-मण्डिता मिथिला·
सन दोसर नहि हो अनुमान
शङ्कर सन शङ्करे तथा
भारती सदृश नहि विदुषी आन
यथा दिवसपतिकेँ उगबामे
दिशाकेर बन्धन न रहैछ
उदित होथि रवि जाहि दिशामे
सैह दिशा प्राची कहबैछ
तहिना सुपथ विपथ हो अथवा
जाही पथ पर राखी डेग
सैह मार्ग सन्मार्ग बूझि
जग केँ चलबा केर हो उद्वेग
जाहि ठाम उदयन समुदित भय
गौरवोक्ति कयलनि उद्घोष
जनमि अयाची सिद्ध कयल
'थिक सर्वश्रेष्ठ विभव सन्तोष'
साग खाय रहला जीवन भरि,
किन्तु न दान कयल स्वीकार
'हम बालक, वाणी नहि बाला'
जनिके पुत्रक थिक उद्गार
जाहि ठाम गौतमक तर्क लग
रामचन्द्र बनलाह अवाक्

साहस के करताह ताहि ठाँ
शास्त्र विषय चर्चा करबाक
जकर कण्ठसँ निःसृत वाणी
धारण कयलक मन्त्रक रूप
बुध धीरेन्द्र रोकि रथ रविहुक
उदाहरण दय देल अनूप
प्राणक आहुति देल, कयल नहि
पराधीनता अङ्गीकार
नृप हरसिंहदेव केर गौरव
अछि सुविदित सगरे संसार
मातृभूमि रक्षाहित जीवन—
दानी जत शिवसिंह नृपाल
अक्षय यश अर्जन कय गेला
जकरा खाय सकय नहि काल
जनिक सखा मैथिल-कवि-कोकिल
भाषा-काव्य-कुञ्जमे कूकि
प्राण-प्राणमे जीवन-दर्शन—
केर चेतना देलनि फूकि
विद्वत्ता-बल अर्जन कयलनि
मिथिला राज्यक जतय महेश
सजल सफल सभ ऋतुमे रहइत
अछि शस्येँ श्यामल जे देश
वाग्वतीक धारासँ सिञ्चित
कण्ठ-कण्ठ वाग्धारा स्रोत
कमला-जल-सिञ्चित कमलक वन
मधुपक दलसँ रहय इरोत

तटबन्धक बन्धनमे जकड़लि
कोसी जतय बहथि उत्फाल
गाबि नचारी, हर हर बम् बम्
कहि, शिवभक्त बजाबथि गाल
एखनहुँ रहि आसक्ति-विरत
कत शक्तिक पूजनमे तल्लीन
रहथि तन्त्र-साधनमे लागल
अनुखन सिद्धासन आसीन
ठाम-ठाम उद्यान रसालक
कदलीवन प्रति गृहक समीप
गाम-गाम डिहवार थान तर
जरइत रहइछ सन्ध्या दीप
मन्दिर-मन्दिरमे घण्टा ध्वनिसँ
दिङ् मण्डल ध्वनित रहैछ
नित आनक उपकार करक हित
लोक जतय सभ कष्ट सहैछ
आङन-आङनमे पवित्र
नीपल चौरापर तुलसी गाछ
यात्रामे शुभदायक मानल
जाइछ भरल कलश ओ माछ
जतय स्वभावहिसँ होइत छथि
परम विनोदी पण्डित लोक
विद्यादान निरत रहि सन्तत
जीवन यापन करथि कतोक
चलू लेखनी ओहि भूमिकेँ पुनि पुनि आइ नमाबी माथ
अहँक ठोर आ हमर कण्ठ दूनू सङ्गहि भय जाय सनाथ

पन्द्रह अगस्त

निर्मल नभ पर
मार्त्तण्ड प्रबल
उद्दण्ड किरणसँ तप्त भेल
विश्वक समस्त कय दूर निविड़तम अन्धकार
सूर्यप्रतीक कय देथि द्विगुण आँखिक इजोत,
जनिका दृष्टिक पथपर नाचय
सदिकाल
प्रबल वेदान्तक सभ सिद्धान्त
सतत रत कर्मयोगमे
पाबि प्रखरतर रश्मि रविक
पुलकित होइत छल गात्र जनिक,
से योगी गण
निर्भय अनुक्षण
उद्दण्ड प्रतापेँ
शमन, दमन ओ दण्ड भेदकेँ अपनौने
पृथ्वीक एक सम्राटक
छत्रच्छायामे निश्चिन्त छला।

Scanned by CamScanner

नहि खलक छलक छल भग ककरो,
नहि पापीकेर लेश कत्तहु
अन्यायीकेँ कय भस्मसात्
जे हरथि दम्भ
से सार्वभौम सत्ताधारी
भारतक भूमिकेँ छला अलंकृत
जावत धरि कयने, ताधरि
नहि विश्वक कोनो भाग
अशान्तिक अनुभव मात्र करैत रहय
सर्वत्र शान्तिमय स्रोत बहय
मिथिलाक कोरमे परिपालित
सूगा धरि मन्त्रोच्चार करय

× × ×

निर्मल नभपर
श्यामल श्यामल मेघक टिक्कर
टहलय लागल,
अन्यायी चारू दिस जागल
उद्दण्ड किरणकेँ झाँपि-तोपि,
कय उठल घटा
सूर्यक 'प्रताप' भय गेल अस्त
ससार व्यस्त भय उठल,
बहल अन्यायक अविरल स्रोत,
विश्व भरिमे बढ़ि आयल बाढ़ि,
गेल भसिया योगीकेर योग,
तपस्वीकेर तपस्या गेल,
विश्वमे विकट समस्या भेल,
कतय छल भरल ज्ञान विज्ञान ?

कतय छल भूमि विश्वमे आन ?
हाय ! से महागर्त्तमे खसल,
धर्म ध्वज धरणीमे जा धसल,
मनुजसँ भेल मनुजता दूर,
देशमे पैसल तेहने क्रूर,
अलंकृत छल जे विश्वक अंश
भेल से पलमे चकनाचूर,
स्वार्थकेर पजरल तेहने आगि
भस्म भय गेल जाहिमे लागि
विश्वकेर सारभूत विज्ञान
बहल अन्यायक स्रोत महान,
विह्वल भय आर्त्तनाद कय उठल
निखिल भूगागक जर्जर प्राण,
दैवकेँ देलक खूब धिक्कारि
विकल प्राणीक आर्त्त चीत्कार
तखन अवतार लेल साकार
अहिंसा मूर्त्ति
कयल मानवक मनोरथ पूर्त्ति।

× × ×

आइ आयल ओ पवनक झोंक
दूर हटि गेल श्याम घनघोर
भेल अछि सम्प्रति स्वर्णिम भोर,
आब निर्मल अछि गगनक प्रान्त,
कते दिनसँ जे छल अति श्रान्त
आइ बुझि पड़इछ से पुनि शान्त,
आइ पुलकित अछि लोकक गात्र
आइ अछि भरल अमृतसँ पात्र

जतय छल दुखमे सभ संलिप्त
ततय बुझि पड़इछ से सभ तृप्त
तपस्या ई थिक ककर ?
जकर अछि विधिसँ बना देल
ओ दिव्य दुहूटा नेत्र,
जकर बल उपजल क्रान्तिक क्षेत्र,
धन्य नरपुङ्गव ! तोहर ज्ञान,
धन्य नरपुङ्गव ! तोहर ध्यान,
चकित अछि विश्वक सभ विज्ञान,
विजयमे मस्त तुमुल कोलाहलसँ
वा गङ्गा-यमुना-कलकलसँ
ई ध्वनि अबैछ अविराम
धन्य हे कृष्ण, धन्य हे राम !
धन्य हे गान्धी रूप ललाम ।
तपस्या सफल भेल जे हेतु
अतः फहराइत अछि ई केतु
अमरपुर धरिमे अछि जयनाद
आइ आयल अछि ई संवाद
सभक मुख पर अछि मधुरिम हास,
आइ हँसि रहल हमर इतिहास,
आइसँ अमर रहत ई पर्व,
आइसँ अमर रहत ई गर्व,
दानवी माया भय गेल अस्त
तुलायल पन्द्रह सँह अगस्त ।

कलश-स्थापन

संस्थापित हो आइ विजय घट,
मार्कण्डेयपुराण-प्रमाणित
देवासुर संग्राम कथाकेँ
स्मरण करथु पुनि भारतवासी
जखन देवगण पर छल संकट,
बुझि पड़ैत अछि ताही युद्धक
पुनरावृत्तिक क्षण आयल अछि।
महिषासुर त्रैलोक्य विजय कय
इन्द्रादिक वृन्दारकगणकेँ
यज्ञ-भागसँ वंचित कयलक।
थाकल देवक पौरुष
इन्द्रक कुलिश निरर्थक,
रुद्रक प्रखर त्रिशूल
भेल छल भोथ जाहि क्षण,
विष्णुक चक्र सुदर्शन
घूर्णित मात्र होइत छल,
यम-कुबेर सभ छोड़ि पड़यला जखन महारण,
सर्वदेव सम्मिलित शक्तिएँ
धधकल क्रोधानलक ज्वालसँ
आविर्भूता भेली चण्डिका,
तखन असुर
विध्वंसक मुखमे गेल सवंशे।

महिषासुरक वंशधर
पुनि अवतीर्ण भेल अछि,
देवक जीवन-पथ फेरो संकीर्ण भेल अछि,
रक्तबीज केर रक्तक विन्दु विकीर्ण भेल अछि,
शान्तिक पथ जग भरिक कण्टकाकीर्ण भेल अछि,
आइ देशकेँ पड़ल प्रयोजन—
आविर्भाव पुनः हो शक्तिक,
सुगठित सैन्यव्यूह-संयोजन,
देशक प्रति निश्छल अनुरक्तिक।
नव उत्साह-सिन्धुमे ज्वारि उमड़ि आयल अछि,
दीपित यौवन देखि
शत्रु दल घबड़ायल अछि।
जागि गेल अछि चण्डिकाक पुनि रक्त-पिपासा,
जागि गेल अछि बलिदानीक मनक अभिलाषा,
ई थिक सत्य—
न शिव कखनहुँ बर्बरता चाहथि,
रक्त-रंजिता-धरा मुदा उर्वरता चाहथि,
मुण्डमालिनीकेँ चाही नव-मुण्डक माला,
असुर दलक संहार करक हित क्रान्तिक ज्वाला।
'इत्थं यदा यदा बाधा'क प्रतिज्ञा मोने
रहती कोना चण्डिका तखन कहू अनठौने।
लैत शान्ति केर नाम भ्रान्तिमय युद्धक वर्जन
करत न किन्नहु देश, करथि बलिदानी गर्जन
सीमित सहनक शक्ति तथा अरिदल अछि उत्कट
दृढ़ सकल्प पुनः संस्थापित करब विजयघट।

विजय-दिवस

भुलइत पावसकेर मचकीपर बैसल ई पन्द्रह अगस्त अछि।

मनुजताक मनकेर मनोरथ
मनुजक कारण भने भग्न हो
फलित न दलितक यदि आकांक्षा
कि, पुनि की उत्सव निमग्न हो,

सुधा-कलश भरने ई वसुधा श्रम-सीकर बिनु आइ व्यस्त अछि।

पुनि पहुँचल पल भरिक हेतु ई
पुण्य-पर्व सन्देश सुनाबय
जन-जनमे अन्तर्हित शक्तिक
एक-एक उपयोग जनाबय

जन-कल्याणक लक्ष्य-शिखर धरि पहुँचक पथ एखनहुँ सिकस्त अछि।

पर-अवलम्बित जीवन भोगब
पौरुषकेर अपमान मानिकऽ
'काल-चक्र संकेत करै' अछि
करी काज सभ चीन्हि जानिकऽ

राष्ट्रक नव-निर्माण करक हित अपन बनाओल पथ प्रशस्त अछि।

नव मुण्डक माला गाँथू

मृत्युञ्जयक सुखद आङनमे मृत्युक ई आवाहन,
शान्ति दूतकें समर सिन्धुमे करय पड़ल अवगाहन।
शिवक कुटी दिस आइ पुनः भस्मासुर मातल आयल,
जकर प्राणमे महाविनाशक कीट अनन्त समायल।
सत्य अहिंसावादीकें मिथ्याचारी ठकलक रे!
अपने हाथें चिता जरा ई मृत्युद्वार तकलक रे!
मायक दूध लजौलक नहि कहियो ई भारतवासी,
आयल सम्मुख लाख परिस्थिति दुर्धट सत्यानाशी।
जय-जय भैरवि असुर-भयाउनि पशुपति-भामिनि जागू,
शुम्भ-निशुम्भ पुनः जनमल अछि, आबहु तन्द्रा त्यागू।
रुण्डमुण्डमय करू धराकें, महिषासुरकें नाथू,
भेल पुरान तोड़ि फेकू, नव मुण्डक माला गाँथू।
कोटि-कोटि अछि शीश बलिक हित अर्पित अहिंक चरणपर,
अद्भुत ज्योतिपुञ्ज जग व्यापत वीरक दिव्य मरणपर।
आत्मा वीर प्रताप, शिवाजी आदिक तखन जुड़ायत,
देखि हमर पौरुष, सुटकौने नाङड़ि शत्रु पड़ायत।
जागल देशक दीपित यौवन रक्त पुनः उधिआयल,
नव-उत्साह-सिन्धुमे सरिपहुँ सौंसे देश नहायल।
ठहरि सकत नहि दुर्मद दानव सुनि गर्जन प्रलयंकर,
लय त्रिशूल उठलाह पिनाकी रुद्र रूप धय शंकर।

●

पर्वतक शिखरकेँ तोड़ि

हम युग युगसँ निर्माण-पथक अश्रान्त पथिक
हमरा अन्तरमे रहल अटल विश्वास सदा,
हम रोकि प्रभञ्जनकेँ दी अपना भुजबलसँ,
संकल्प हम दृढ़ देखि खसय मूर्च्छित विपदा।
हम मनुज सकल भारतवासी मानववादी
योजनाबद्ध जीवन यापन करबाक हेतु,
बाहर अन्तरकेँ राखि परिष्कृत, पौरुषसँ
दी बान्हि अगम जलनिधिपर पाथरकेर सेतु।
कतबो अगाध ई गाधिनन्दिनी रहथु, मुदा
दूनू तट कसि कय बान्हि, नाथि कय रखने छी,
सम्मिलित शक्ति हमरे दुर्गाक स्वरूप धरय,
अङ्गारक माला हमहि गाँथि कय रखने छी
श्रमशीलताक की मोल मनुष्यक जीवनमे
अनुभवक तराजूपर रखनेछी नापि जोखि,
हमरे श्रम-सीकरसँ भय साद्र धरा हरियर
रखने छथि गौभव-पूर्ण समुज्ज्वल अपन कोखि।

नहि भाग्यक राखि भरोस भाङ पी भकुआयल
छी रहनिहार आर्यावर्तक हम अभिमानी,
हम तोड़ि तलातल पाताल-स्थित गंगाकेँ
धरतीकेँ शीतल करक हेतु ऊपर आनी।
पर्वतक शिखरकेँ तोड़ि बना दी हम समतल
मरुभूमि कोड़ि श्यामलतासँ भरि दी अञ्चल,
हम भगीरथक अनुगामी उद्यमशील मनुज
हिमगिरिक शिखरसँ उतरि पड़थि गंगा चञ्चल।
स्वातन्त्र्य-समरमे विजय शंख छी फूकि चुकल
संलग्नताक परिचय जग पहिने पौने अछि,
हम आत्मबली संघर्षशील चेतन प्राणी
पशुबल हमरे लग उन्नत माथ झुकौने अछि।
हम लौहपिण्डकेँ तरल बनाबी फूक मारि,
निःश्वास हमर तैजस धारा उगिलैत रहय
धमनीमे रक्तक धार बनल बिजुरी कड़कय
श्रम-घन जीवन-धारा बनि बनि पिघलैत रहय।
छातीक जोरसँ मन्थन कय उत्साह-सिन्धु
बाहर करैत छी सुधा भरल सोनाक घैल,
हम तपः पूत, राष्ट्रक कणकणसँ देब छोड़ा
युग-युगसँ बैसल कलुष, दीनताजन्य मैल।
मूल्याङ्कन कय रखने अनुभव-मंजूषामे
श्रमकेर महत्ता बुझा देब जगतीतलकेँ,
बरिसय जगमे शान्तिक अजस्र धारा अनुखन,
शीतल कय सकय सभक सन्तापित हीतलकेँ।

कर्षक मण्डल

हम कोटि-कोटि कर्षक-मण्डल
आ आकर्षक ई वसुन्धरा,
श्रमकणसँ सिञ्चित जे कहियो
रहिये न सकै' छथि अनुर्वरा।
हम ताही धरतीकेर पुत्र
जे सभ दिन सभ किछु छथि सहैत,
धन-धान्य-पूर्ण भण्डार जनिक
अछि आठ पहर भरले रहैत।
निज भुजबलपर विश्वास राखि
उठबै' छी डेग अपन निश्चल,
कय सकी भुवन भरिकेर भरण
संकल्प हमर हृदयक निश्छल।
नहि अहङ्कार कय सकय स्पर्श
दुर्जय शत्रु हम दीनताक,
अन्वेषक नूतनताक, किन्तु
गौरव रखैत प्राचीनताक।

Scanned by CamScanner

जल-थल-नभ-गिरि-गह्वर-सागर
सभपर अदम्य अधिकार हमर,
संघर्षशील जीवन-पथपर,
बाधासँ करिते रही समर ।
सृष्टिक सुन्दर उपहार ग्रहण
करबाक कलामे बनि प्रवीण ।
जगतीक प्राणमे फुकनिहार
हमही छी मधुमय शान्ति-वीण ।
हमरे तार्किक मस्तिष्कक लग
अछि जग प्रपञ्च मानैत हारि,
हमरे मुट्ठीमे बन्द भेल
रहइछ झंझा, अन्हड़-बिहाड़ि ।
हम सजग सतत राष्ट्रक प्रहरी
मानवता प्रति अति जागरूक,
हमरे ज्योतिक भयसँ पड़ाय
झट आँखि बन्द कयने उलूक ।
श्रम-जलक बाढ़िमे दहा दैत—
छी कोमल हृदयक दुर्बलता,
भुजदण्ड ठोकि छी ठाढ़,
कनै' अछि ठोहि पाड़ि कय निष्फलता ।
संसारक घटना-चक्र चलय
हम ताही चक्रक धूरी छी,
लोहाक खानि ताकओ दुनिआ
हम प्रस्तुत रेजिस छूरी छी ।

●

विधिक चिन्ता

कल्पनाक व्योममे
भावनाक यान पर
चढ़ल चढ़ल घूमै छी,
घूमि घूमि देखैं' छी
पूब तथा पच्छिम कें,
उत्तर ओ दच्छिन कें,
चारू टा कोन तथा
धराकें, खमण्डलकें,

मानवकेर अन्तरमे
दानव जे पैसल अछि
जकर अट्टहाससँ ई
मुखरित दिगन्त अछि
सौंसे भूगोलकेर।
ब्रह्मा दय माथ हाथ
बैसल झखैत छथि,
कयलनि ओ सोचि कते
रचना मनुष्यकेर,
सृष्टिक सभ साधन दय
श्रेष्ठ सभहि प्राणीमे,
किन्तु आइ वैह बनल
कारण विनाशकेर
अपनेसँ अपनाकेँ
वञ्चित करैत अछि,
मस्तिष्कक टेमीपर
हृदयक सभ कोमलता
दीप परक फनिगा जकाँ
कूदि कय जरैत अछि।
ब्रह्मा दय माथ हाथ
बैसल झखैत छथि।

आइ उमकि उमकि ...

आइ उमकि उमकि बमकि रहल
बंकड़ा जवान
देब देश हेतु जान
मातृभूमिकेर राखि लेब
मान ओ गुमान
शत्रु सीमापर फानि
आबि, ठाढ़ तोप तानि,
चानि चूरि चीनकेर
करब धूल्हिमे चलान।
अंग-अंगमे उमंग
देखि दुष्ट दैत्य दंग
संग संग जंगकेर
रंग-ढंग घमासान।

बन्धु बूझि कयल प्रीति,
थीक आर्यकेर रीति,
किन्तु आब ने प्रतीति
नीति देखि अनठेकान।
हाथ रामकेर वाण,
परशुरामकेर कृपाण,
प्राणदान छाड़ि पाबि
सकल आन कोन त्राण।
बन्द बुद्धिमे कपाट,
छाड़ि बुद्धकेर बाट,
ठाठ ठाठि ई कुठाठ
होयत युद्धमे हरान।
ताकि ताक शत्रुताक,
जानि बूझि ई वराक,
विश्व संघसँ फराक
बैसि करय कूद फान।
प्राण दान माङि जाउ,
माङि चारि खूट खाउ,
चाउ-माउ ने लजाउ
बाउ! बापकेर बथान।



शान्तिक रक्षा

इतिहासक पन्ना पर देखू
ढबकि गेल अछि मोसि,
तन्द्रा तोड़क हेतु लोकके
चाटी अखरा नोसि।
पुरिबा-पछबा हूँकि रहल छै'
उड़ल फिरै' अछि पात।
तदपि कल्पना क्षितिजकोरमे
हँसइछ स्वर्णिम प्रात।
बुझले अछि पहिनेयँ दम्भो—
मानव मनक दुराशा,
कहि गेलाह कविवर कबीर
जग पानिक तिपल बतासा।
द्वेषक धार, अहंकेर नौका,
लोभे अछि करुआरि,
स्वार्थक घूर्णिचक्र पर घुमइत —
के के सकत उबारि ?
गगन पारमे पसरि रहल अछि
विकट तिमिर केर जाल,
विज्ञानक बीहरिमे बैसल
विध्वंसक ई व्याल।

धर्म-दीपमे श्रद्धा-सिञ्चित
रहल न सत्यक टेमी,
मनुज-लोकमे बाँचि सकत नहि
आब मनुजता प्रेमी।
विश्वासक बस्ता फोलब तँ
भेटत कपट प्रबन्ध,
आत्मतत्त्व दर्शनक दृष्टिञ
मनुज भेल अछि अन्ध।
रखलनि विष्णु सुदर्शन,
ब्रह्मा लेलनि नुका कमण्डल,
रुद्रक डमरू-नाद-निनादित
रहत सकल ग्रहमण्डल।
बीतल सरस-वसन्त, उषम–
ग्रीषम अछि सम्मुख ठाढ़,।
देखि रहल छी युगक पीठपर
महाभयंकर दाढ़।
शशधर बनि विषधर विचरै' अछि
चाही रहक सचेत,
मारल जायत शान्ति अन्यथा
मङनी अपटी खेत।



कृषकक तैयारी

धरती देखुन उझिलि बखारी,
चाहय क्यो न अन्न सरकारी।
लय मुट्ठीमे जान समरमे
लड़ल बहादुर सेना,
आयल पार कृषक मजदूरक
आइ चुआय पसेना
मूड़ी काटि अकालक गाड़ी,
भूख न देअय फेर मुड़ियारी।
कोटि-कोटि धरतीकेर बेटा
मारय चोट नङाड़ा,
शास्त्री लाल बहादुर देलनि
जय किसानकेर नारा,
भिड़ि कय करय काज नर-नारी
उपजय धान गहूम खेसाड़ी।

बनि प्रधान-मन्त्री क्यो
देशक शासन-सूत्र सम्हारथु,
किन्तु धान-मन्त्री किसान बनि
अगिले मुहड़ा मारथु,
पाबथु परसल थार नोथारी
भरि भरि थारी पुनि घरवारी।
धरब कोदारि, करब भू-सेवा
मेवा पायब निश्चय,
माता धरती सुनती विनती
फुजत खजाना अक्षय,
परती रहत न बाड़ीझाड़ी,
हर्षें गमकत केसरि क्यारी।
सजला-कमला-गंगा-यमुना-
सरयू हृदय जुड़ाबथि,
तखन किएक भारतवासी
अनका लग माथ मुड़ाबथि,
चलतनि अनपुरनाक सवारी
भरतनि खोपड़ी महल अँटारी।
बलिदानी बलि चढ़ा-चढ़ा कय
कयलनि देशक रक्षा,
भूख-युद्धमे विजय करक हित
बान्हि जोरसँ कच्छा,
कृषकक वर्ग कयल तैयारी।
बुढ़बो बिसरल अपन बुढ़ारी।

मनु-सन्तान

नव चिन्तन, नव भाव-भूमिपर
नव-नव सृष्टि-विधान
करय नित नूतन मनुसन्तान।
क्षिति पर, जल पर, आर पवन पर,
वितल, तलातल, सकल भुवन पर,
अन्तरिक्षसँ पार गगन पर,
चन्द्रलोक, नक्षत्रलोक धरि
अपन सफल अभियान
करय नित नूतन मनुसन्तान।
तन पर, मन पर, जड़-चेतन पर,
प्रकृति-प्रदत्त सकल साधन पर,
पञ्चतत्त्व-निर्मित कणकण पर
आर अधिक की, जन्म मरण पर
स्वामित्वक अभिमान
करय नित नूतन मनुसन्तान।

भ्रमण करक हित नभ अनन्त ई,
नव ज्योतिर्मय दिग-दिगन्त ई
सभ्यताक वनमे बसन्त ई,
सर्व-शक्ति-सम्पन्न कहाबय
एक मात्र विज्ञान
जकर कर्त्ता थिक मनुसन्तान।
किन्तु विजय नहि अहंभाव पर,
मनक कलुष, विकृतिक स्वभाव पर,
मनुज चलय दनुजक स्वभाव पर,
तकनहुँ पाबि रहल नहि कत्तहु
दानवताक निदान।
विकल आकुल मन मनुसन्तान।
आइ मनुजता ग्रस्त रोगसँ,
करुणा मनुजत्वक वियोगसँ,
कानि रहल अछि हृदय-दोगसँ,
छापि रहल अछि भाव-गगनके
चौदिस तिमिर-वितान।
चकित मन देखय मनुसन्तान।

प्रेम : एक परिभाषा

हमर प्रेम की थिक
से हमरा धरि बूझल अछि,
हम मात्र हमही छी,
अहं केर छूति नहि,
प्रेमकेँ विसंगति हम
बूझल नहि जीवनमे
संगति थिक प्रेम
जे समाज बीच रखने अछि
हमर 'हम'
यथासमय, रहिकय समाज बीच
पुत्र, पिता, मित्र, भाय, बन्धु, पति,
शिक्षक ओ छात्र आदि आदि बहुत,
सभ किछु बनैत अछि
ई सभ किछु बनबामे
बहुत किछुक काज छैक,
अतः ताहि बहुत किछुक
करितो जोगाड़ अछि।

पिताकेर प्रेम--
सौंस नारिकेर पुत्र हेतु,
ऊपरसँ सक्कत
ओ रुच्छ सन लगैत अछि,
भीतरमे--
सजल, तरल,
दुग्धोज्ज्वल कोमल फल
खयले पर बुझल जाय
व्यर्थ स्वाद कहने की ?
पुत्रकेर प्रेम---
पिताकेर हृदय-घृतक हेतु
रौद थिक,
देखलासँ लगले पिघलि जाइछ।
शिक्षककेर प्रेम---
शुद्ध भुल्ली कुसियार बुझू,
देखबामे ठेङा सन
देखि चौंकि उठी.
मुदा जँ जँ चिबबैत जाउ
मधुरइ बुझैत जाउ।
मित्रकेर प्रेम—
पानि चिन्नीकेर रूप स्वत:,
आपसमे मिललासँ
भिन्नता समाप्त तुरत।
भाय-बन्धुकेर प्रेम---
डोरी ओ डोल बनल
तृषित जे समाज तकर
तृषा मेटा दैत अछि।

जीवन थिक साइकिल,
पति-पत्नीकेर प्रेम—
क्रैंक-चेन बनल
साइकिलकेँ
आगाँ घिचैत अछि।

किन्तु जे समग्र रूप
प्रेमक हम देखल से

दूध मध्य अन्तर्हित
नेनुक समानअछि,
मथला सँ फक्क दऽ कऽ
ऊपर अलगि जाइछ,
लाख यत्न कयलो पर
मिश्रित नहि होइत अछि।



कविताक मृत्यु

कविता सुनबाक हेतु
बैसल छी अपने सभ
किन्तु हम सुनायब
ई परम सुखद समाचार।
सुखद कही, शुभद कही,
हमरा लय सैह थीक,
भय सकैछ अहंक हेतु
एहिसँ किछु भिन्ने हो,
सरलो हो, सड़लो हो
वा मनमे गड़लो हो,
सुनलो हो, जनलो हो,
नोन-तेल सनलो हो,
भय सकैछ पलखति बिनु
पढ़लो पर बिसरल हो,
बुद्धिकेर बटुआसँ
चुप्पे चुप ससरल हो,

थीक मुदा
एक प्रमुख चिन्तनीय समाचार।
अपनोकें सुनल होयत
संसारक शक्तिमान देश सभ
विदेशकेर रक्षा लेल
आतुर अछि,
नहि तँ आशङ्का जे—
विश्वशान्ति चटपटमे
खतरामे पड़ि जायत,
दोसर आशङ्का जे—
मानवता मरि जायत,
तखन फुजल पाड़ा सभ
सगर खेत चरि जायत,
सम्भव थिक धुरी छोड़ि
धरती से ससरि जायत,
ताहि हेतु शक्तिक
सन्तुलने आवश्यक अछि।
एकक भय दोसरकेँ
रखतै आतङ्कित तँ
एक नहि दोसरा पर
कय सकते आक्रमण।
तेँ बनाय एटम, हाइड्रोजनबम
आदिआदि, कयकय विस्फोट
अपन शक्तिकेँ नपैत अछि,
कृत्रिम उपग्रहसँ अन्तरिक्ष बाट पकड़ि
धरतीकेर लोक
चन्द्रलोककेँ टपैत अछि।

प्रकरण थिक ठीह
जाहि प्रकरणमे काव्य-गगन
बहुतो उपग्रहसँ सम्प्रति आच्छन्न अछि,
चक्कर ओ मारि रहल
गुह्यक अन्वेषणमे
अर्थ गुप्त, भाव गुप्त,
रस-अलङ्कार गुप्त
रखने छल नुका नुका
पूजीपति काव्य ग्रन्थ,
अलङ्कार, आभूषण,
वृहत् कोष संग्रह कय
रखितो पर अपनाकेँ मानै' छल मटोमाट।

ज्ञाते ने एकरा जे
क्रान्तिक युग धुआँधार
बदलि रहल विश्वभरिक
परिभाषा, अभिलाषा,
रीति-नीति-पद्धति
ओ सभ पुरान मान्यता।

भ्रान्तिक अन्हार बीच
क्रान्तिक आह्वान सूनि,
शान्तिक सुरक्षा लय
साहित्यक माथे पर
अणुबम विस्फोट भेल।

किछु विधा नुकाय रहल,
किछु बिधा पड़ाय गेल,

किन्तु पड़लि चोटे पर
कविता आ कथा दूनू
कथा तँ नङड़ाइत कहुना
जान टा बचौने अछि,
कविता बेचारी किन्तु
मारलि गेलि अनचोके।

मारलि गेलि कविता
आ मरि गेलि कविता तँ
कवियोकेर जान छुटल
पिङ्गल उनटयबासँ।

सम्प्रति तँ कविताकेर
अङ्ग-अङ्ग चीरि फाड़ि,
डाक्टरेट पयबामे
लागल छथि अनुसन्धाता :

मम्मटसँ अम्मट
घोरबा रहला प्रेमसँ,
दण्डी छथि दण्डित
आ विश्वनाथ ?
ज्ञानवापी मध्य कूदि
भीतरसँ
टुकटुक तकैत छथि।

पिङ्गल सँ पिण्ड छुटल
परम सुखद समाचार
हमरालय सैह थीक,
भय सकैछ अहाँ हेतु
एहिसँ किछु भिन्ने हो,

सरले हो, सड़ले हो,
मनसँ उखड़ले हो,
सुनले हो, जनले हो,
नोन-तेल सनले हो
भय सकैछ पलखति बिनु
पढ़ले पर बिसरल हो,
बुद्धिकेर बटुआसँ
चुप्पे चुप्प ससरल हो।

बैसल छी अपने सभ
कविता सुनबाक हेतु
सूनि लेलहुँ कविताकेर
मृत्युक शुभ समाचार।

युवक सँ

आइ परीक्षा दिवस तुलायल,
अन्धकार युगयुगक बिलायल,
बढ़ल प्रकाश दिशा-विदिशा
अगजग प्रमुदित,
चुन-चुन चुन-मुन चुनचुना उठल
आत्मारूपी भारतक विहग।

की होयत प्रात,
उठि अओता दिनकर अम्बर मे ?
देशक कण-कण की चमकि उठत ?
नहि-नहि, किछु दिन धरि अछि विलम्ब,

दल बान्हि घटा कारी-कारी
अछि उमड़ि रहल
ओ घुमड़ि रहल अछि,
लय बिजुरिक तरुआरि
मनहिमन गुम्हड़ि रहल अछि।

सावधान भय जाउ,
अरे रे ! पहुँचल प्रबल बिहाड़ि
भरल नभ,
धूलि-धूसरित-प्रकृति
अहुरिया काटि रहल अछि,
आगाँ पैर उठयबासँ पहिने
सतर्क भय जाउ
धरातल फाटि रहल अछि।

कहबा लय हम छी स्वतन्त्र,
हमरे सभसँ संचालित अछि
सम्पूर्ण यन्त्र,
हमरे लोकनिक थिक
माटि, पानि, जल, थल, नभ
सकल सुखक साधन,
सभ किछु पर अछि अधिकार स्वतः
ई जन्मसिद्ध अधिकार,
ऐहि लय लड़ब, मरब,

मरि मरि कय
अपना अधिकारक रक्षा धरि
निश्चय करब,
लड़ब, निश्चय जीवन भरि लड़ब।

भला,
युगयुग सँ अविरल स्रोत प्रवाहित
विद्यापतिक मधुर स्वरसँ
सेवित, पूजित,
चन्दाक चन्द्रिकासँ धवलित,
मुरलीधरसँ मन-मोद पाबि
एखनहुँ शिथिला मिथिला प्रमुदित,

सीतारामक पद-विन्यासें
जन-कण्ठ-कण्ठ सँ प्रतिध्वनित,
कविशेखर बदरीनाथ रचित
अनुपम कविता-कानन कुसुमित,
किरणक मृदुकिरणों आलोकित।

सुमनक सौरभसँ अति सुरभित,
मधुपक मधुगुञ्जन-अनुगुञ्जित,
यात्रीक रुचिर शब्दावलिएँ
नित नूतन भावें परिपूरित,
हरिमोहन-कृत मनमोहन पदसँ
सहजहि जन-मन आकर्षित
संस्कृतिक भित्ति
भाषा पर क्यो आक्षेप करत ?
से सहब ?
रहब कायर बनि ?
त्यागब आश जीवनक ?
वा त्यागब विश्वास जीवनक ?
से कथमपि नहि होयत,
विरोधीवर्ग देलक भुतिआय
ताहिसँ गेलहुँ एते पछुआय,
आइ भ्रमवश यदि
खत्ता खाइ,
तखन कहबालय रहब स्वतन्त्र.
रहत नहि कतहु अपन अधिकार।
युवक !
आबहु तँ करू विचार,
जीवनक अछि नहि आन प्रकार,
उजड़ि नहि जाय
बसल संसार,
विनय तें छी करैत करबद्ध
रहू रक्षालय सभ सन्नद्ध ।

सुधिक हिलकोर

तनिक सुधिक हिलकोर
उठय नित मानस-सरमे जोर।
स्वर्गहुँसँ बढ़ि सुखमय बीतल
सौंसे शैशव काल,
हृदय लगाय सतत जे रखलनि
बुझितहुँ जग जंजाल,
जे सिंहासन हरलक अबितहिं निष्ठुर-वयस किशोर।
तनिक सुधिक हिलकोर।
हमर मनक आशा-आकांक्षा
जनिकर मनक हुलास,
हमरे सुखमे देखि मेटाइछ
जनिकर मनक पियास,
कतहु जाइ हम, चित्त जनिक नहि छोड़य हमर पछोड़।
तनिक सुधिक हिलकोर।
हरियर कंचन बनल रहय नित
जनिकर हृदयक चास,
कम्पित कय दैछल अन्तरकेँ
हमर दीर्घ-निःश्वास,
साओन भादव बनल नयनमे उमड़ि उठय घनघोर।
तनिक सुधिक हिलकोर।

भाव-भूमिपर एक वृक्ष हम
प्रिय सुरतरुक समान,
हमरेपर लटकल रहइत छल
निरवधि आकुल प्राण,
जनम-अवधि नहि नयन अघायल अनुखन भाव-विभोर।
तनिक सुधिक हिलकोर।

जनिक कामना-कालिन्दीमे
एक हमहि जलजात,
जीवन-उदयाचलक शिखरपर
मधुमय अरुणिम प्रात,
हमर यशोदा, हम खुरलुच्ची तनिके माखनचोर।
तनिक सुधिक हिलकोर।

कातरता आतुरता बढ़बय,
करय मनक दुख दून,
भाव अछैत, अभाव ककर ई
कयलक जीवन सून,
जनिक अर्चना हेतु अर्घ्य-जल ढारय लोचन नोर।
तनिक सुधिक हिलकोर।

गंगा ओ गायत्री सम जे
चरण हमर आराध्य,
जनिकर वत्सलता छाहरिमे
कय न सकल दुख बाध्य;
तनिके वन्दनमे रत रहु मन! दुपहर-सन्ध्या-भोर।
तनिक सुधिक हिलकोर।

●

सेवक एक आत्म-परिचय

हाय ! बाजू की बजलो ने जाय ।

कहबा लय हमहू छी गृह-निर्माता,
ठीक रहय बाध भरिक खेसरा ओ खाता,
ढकने फिरैछी नगर भरि तैयो
दस कट्ठा प्रति दिन बोहाय ।
हमरो लगै अछि सोहनगर गामे,
हमहू पुजाबी जा पुरखेक नामे,
अपनेसँ अप्पन प्रशंसा करैं' छी
तैयो ने मनुआँ अघाय ।
हमरे बनौने बनय क्यो राजा,
हमरे बजौने बजै' अछि बाजा,
खाजा आ लड्डू परसि दै' छी अनका
ताहीसँ अतमा जुड़ाय ।

उज्ज्वल रहल सभ दिन इतिहासे,
आइ भने एक साँझ होइत हो उपासे,
आशामे पेट छुटल भऽ गेल बखारी
भरितो सतत खलिआय।
गुरुए तँ कहबौ छी हम संसारक,
आइ भने खापरि बनी कंसारक,
तैयो तँ लाड़निकेर मुँह झरकयबनि
रखबनि कतेकेँ उलाय।
हमही ली ठीका परक उपकारक,
अपना लय रखने छी सम्प्रदान कारक,
दा धातुकेर हम प्रयोगे ने सिखलहुँ
तैयो चली उधिआय।
दलित-पतितकेर हमही छी त्राता,
मन्त्रो जपै' छी 'जय भारत माता',
सेवाकेर नामपर मेवा पबै' छी
सेहो तँ बहुजन हिताय।
छत्तिस गजकेर रखनेछी अँतरी,
आँकि सकय नहि क्यो जन भितरी,
दुनिआसँ माङि चाङि कोठी भरै' छी,
रखितो छी तकरा जोगाय।
हम की छी, से बुझथि नहि देवो,
पारो उतरि आइ, दी नहि खेबो,
हमरे लय अगिला माङी सुरक्षित,
नहि तँ दी नावो डुबाय।



अपन अपन विश्वास

अपन अपन विश्वास थिकैक।
अहाँ बुझैत छिऐक ईश्वरक
सकल कल्पना फूसि,
जीवन थिक संघर्ष लड़ैत
रही तेँ सभसँ ठूसि।
अहाँ बुझैत छिऐ' परिजन
पुरजनसँ की सम्बन्ध,
अपन पेट टा भरक हेतु
चाही किछु नीक प्रबन्ध।
अपने, बेटा-बेटी, पत्नी
एतबे थिक परिवार,
क्षुद्र स्वार्थसँ परिवेष्टित अछि
एहिना भरि संसार।
अहाँ बुझैत छिऐक पितर लय
व्यर्थ चुरू भरि पानि,
प्रत्यक्षे टा केँ प्रमाण बुझि
ली विवाद किछु ठानि।

हम बुझैत छी ईश्वर अंशे
थिक संसारक प्राणी,
शाश्वत सत्यक चिन्तक ऋषि—
मुनिकेर मुखक ई वाणी।
जीवन थिक संघर्ष, तकर
कारण थिक मनोविकार,
मनोविकारो नैसर्गिक, तेँ
करी तकर प्रतिकार।
अन्तर्मन जेँ छोड़ि प्रकृतिकेँ
विकृतिक आश्रय लैछ,
तेँ विवेककेँ जाग्रत कय
तकरासँ लोक लड़ैछ।
परिजन-पुरजन सम्बन्धे थिक
मनुष्यताकेर तत्त्व,
तकर सुरक्षा लग पुनि पेटक
नहि अछि ततेʼ महत्त्व।
हम बुझैत छी पेट अहंक थिक
गोनूझा केर ढाकी,
भरि न सकत आ देव-पितर-
ऋषि-ऋण रहि जायत बाँकी।
स्वार्थक क्षुद्र परिधिमे सिकुड़ल
रहि नहि सकब मनुक्ख,
किन्तु अहाँ नहि मानब, हमरो
अछि तकरे टा दुःख।
पितरक सुमिरन कयनिहारकेँ
भेटय आत्म-प्रकाश,

बिना स्वरूपक परिचय रखने
रहब मनुष्याभास ।
चर्म-चक्षसँ नग्न सत्य केर
दर्शन भय न सकैछ,
तेँ अपने अन्तरमे चिन्तक
जीवन-ज्योति तकैछ ।
छोड़ि आधिभौतिक सुख, भ्रमसँ

बहरयबाक प्रयास थिकैक ।
अपन अपन विश्वास थिकैक ।

अहाँ बुझैत छिऐक नीति,
आदर्श थिकै' पाखण्ड,
साम-दाम ओ दण्ड-भेदमे
सभसँ उत्तम दण्ड ।
अहाँ बुझैत छिऐक भोग
मानव जीवनकेर लक्ष्य,
मङ्नीमे जे भेटि जाय से
भय न सकैछ अभक्ष्य ।
अहाँ बुझैत छिऐक वंचना
करब थिकैक चलाकी,
हो किछु लाभक सम्भव तँ
आगाँ-पाछां नहि ताकी ।
अहाँ बुझैत छिऐक पूर्वजक
संयम-नियम वितण्डा
धर्मशास्त्र थिक सकल समाजक
शोषक, तीर्थक पण्डा ।

हम बुझैत छी—बिनु आदर्शें
व्यर्थ मनुष्यक जीवन।
दण्ड-भेदसँ भय न सकै' अछि
शान्ति पथक अवलम्बन
हम बुझैत छी- भोग रोग थिक,
योगे त्याग सिखाबय,
त्यागे थिक ओ तत्त्व मनुजकें
अमृतक स्वाद चिखाबय।
हम बुझैत छी परमार्थेसँ
मनुज मनुजता पाबय।
भक्ष्य वैह थिक जे मानसमे
सात्विक भाव जगाबय।
संयम-नियमक पालन कयनहि
मनक हटैछ विकार,
धर्मशास्त्र तकरे निर्णायक,
पूर्वज कयल विचार।
आत्म-तत्त्व थिक सत्य-प्रदर्शक
बाँकी मनोविलास थिकैक।
अपन अपन विश्वास थिकैक।

अहाँ बुझैत छिऐक धर्म थिक
कारण मूल विवादक,
अहाँ बुझैत छिऐक जाति थिक
वैषम्यक उत्पादक।
अहाँ बुझैत छिऐ' जे सहजहि
समता आनि सकै'छी,
झोलङा भेल समाज-खाटकें
तुरत गतानि सकै'छी।

हम बुझैत छी—धर्मक बलपर
चलइछ मानव-लोक,
अकर्त्तव्यपर एखनो धरि
धर्में रखने अछि रोक।
धर्मक अर्थ थिकै' अनुशासन
शासन थिकै' व्यवस्था,
तकरे यदि पालन नहि होयत
बिगड़त स्वतः अवस्था।
समता थिक अस्वाभाविक,
तें व्यर्थ तकर आयास,
सिंहक भोजन मांस, पशुक
भोजन होइत छै' घास।
विद्या-वुद्धि-विवेक-ज्ञान-
बल-रूपें जखन विषमता,
प्रकृति-प्रदत्त थिकैक, तखन
की रटने होयत समता।
यैह विषमता त' समाज—
गाड़ीकें घीचि चलाबय,
शैत्य पानिकें बर्फ बनाबय—
गर्मी पुनि पिघलाबय।
छोट पैघ सभ काज समाजक
थिक आवश्यक अंग,
ठाढ़ रहैछ भवन जँ चारू
ठीके रहय अलंग।
की सुरत्व, असुरत्व, दुनूकेर
मानव-हृदय निवास थिकैक।
अपन अपन विश्वास थिकैक।

बंगीय बन्धुसँ

हे बंग निवासी बन्धु ! अहाँ छी हमर अङ्ग,
अछि हमर मनक उत्ताप अहिंक सन्ताप सङ्ग ।

हे वीरताक प्रतिमूर्त्ति ! अहाँ सभ थिकहुँ धन्य,
इतिहासक पन्नोपर अछि नहि दृष्टान्त अन्य ।

ई नग्नक्रूरता आइ अहिंक घर नाचि रहल,
अछि केहन मनोबल सुदृढ़, लौह टा जाँचि रहल ।

अत्याचारी धुधुआइछ, किन्तु मिझाइत अछि,
चुट्टीकेँ मरबाकालक पाँखि बुझाइत अछि ।

लपलपा रहल अछि चारू दिस क्रान्तिक ज्वाला,
रणचण्डीकेँ पहिराउ अहाँ मुण्डक माला ।

शत्रुक संहारक हेतु अहाँ रण-सज्जित छी,
हमलय सहानुभूतिक स्वर छुच्छे, लज्जित छी ।

अछि उमड़ि रहल आगाँ-पाछाँ उत्साह-सिन्धु,
स्वीकार करू नैतिक बल, हे बंगीय बन्धु !

विश्वास भरल बढ़ि रहल अहँक प्रत्येक चरण,
विजय-श्री करती आगाँ बढ़िकय स्वयं वरण ।



एक बात नहि बिसरक चाही

एक बात नहि बिसरक चाही
हमहूँ अंग समाजक छी,
किछु नहि छी, तैयो सभ किछु छी
ई जुनि बुझी अकाजक छी।
कोनो अकाजक वस्तुक रचना
करिते छथि भगवाने ने,
नहि बुझने कहि दियै' अकाजक
एहन कथनकेर माने ने।
विश्वक ई वैचित्र्य, विचारक
वैविध्योक ठेकाने ने,
अहंभाव तजि अनकर कथनी—
केँ करइत छी काने ने।
प्याज थिकहुँ तँ रहू, बुझी जुनि
हम तँ पेनी प्याजक छी।
थिकहुँ गृहस्थ करै' छी खेती
अपन पसेना बोरै' छी,
रौद प्रचण्ड, प्रबल झंझाके
देह लगा झिकझोरै छी।

राति-राति भरि जागि बाध-वर्न
उपजल अन्न अगोरै' छी,
सीस-सीस सञ्चित करबा लय
समचा सकल सङोरै' छी।
थीक समाज जहाजे, तँ हम
पंखी ओहि जहाजक छी।
थिकहुँ श्रमिक, धरतीक गर्भसँ
ठोस, तरल सभ कोड़ै' छी,
चमक-दमक अछि जाहि महलमे
तकर पजेबा जोड़ै' छी।
चढ़ि पहाड़हुक छाती पर हम
तकरो आँत ममोड़ै' छी,
परती भेल एहि धरतीकेँ
लय कोदारि हम तोड़ै' छी।
सेवे टाकेँ धर्म बुझै' छी
सेवक गरीब-नेबाजक छी।
थिकहुँ प्रशासक, राज काजकेर
करइत छी यदि संचालन,
अछि उत्तरदायित्व भङ्ग हो
नहि समाजमे अनुशासन।
थीक प्रशासन यन्त्र, तकर हम
छी आवश्यक पुर्जा सन,
अछि हमरो कर्त्तव्य करी सभ
विधिएँ नियमक परिपालन।
आन-आन थिक आन अंग
आ मेरु-दण्ड हम राजक छी।

व्यापारी छी, राष्ट्रोद्योगक
भार माथपर गछने छी,
अनुखन अर्थक चिन्तनमे हम
बुद्धि-समुद्र उपछने छी।

अवसर पर गबदी लधने
कतबहिमे कछनी कछने छी
अनकर बात कहू की, अपने
अपन कोंढ़ धरि चँछने छी।

तदपि देश पछुआयल हो, नहि
भागी तखन स्वराजक छी।

छात्र थिकहुँ, अपना चरित्र—
निर्माणेमे लागक चाही,
प्रहरी छी, राष्ट्रक रक्षामे
राति-दिवस जागक चाही।

सैनिक छी, नहि समरभूमिसँ
पीठ देखा भागक चाही,
नेता छी तँ सभसँ पहिने
स्वार्थभाव त्यागक चाही।

संयोजक बनि रहू, भ्रमहुँ नहि
सोचू देश विभाजक छी।

ई देश हमर

ई देश हमर, सन्देश अमर
युग-युगसँ जगकेँ दैत रहल,
पुरुषत्व हमर, मनुजत्व हमर
मानवताकेँ सजबैत रहल।
हम इतिहासक निर्माता छी,
नव मुक्ति-मन्त्र उद्गाता छी,
दलितक, पतितक नव अध्यायक
पन्ना तपि-तपि पलटैत रहल।
ई देश हमर, सन्देश अमर
युग-युगसँ जगकेँ दैत रहल।
'याचितारश्च नः सन्तु' तथा
'याचिष्म माच कञ्चन' कहि हम
वन्दना करी पितरक श्रद्धासँ,
राखिहृदय विश्वास चरम
चौदिशसँ आयल संस्कृतिकेँ
निष्कपट भेल पचबैत रहल।

ई देश हमर, सन्देश अमर
युग-युगसँ जगकेँ दैत रहल।
कयलक नहि ककरो रोमभंग,
औदार्यभाव शत्रुहुक संग—
रखइत, सहलक विश्वासघात,
दुख-सागरकेँ उपछैत रहल।
ई देश हमर, सन्देश अमर
युग युगसँ जगकेँ दैत रहल।
यदि गदह–पचीसी बीति गेल,
देशक हित मनमे प्रीति भेल,
दृढ़ बढ़त चरण प्रगतिक पथपर,
उत्साहभाव उछिलैत रहल।
ई देश हमर, सन्देश अमर
युग युगसँ जगकेँ दैत रहल।



युद्ध : एक समाधान

सुनै' छिऐ' हमहूँ
आ अपनहुँके" सुनल होयत
मानव मस्तिष्कक प्रयासे" ई विश्व आब
सुटुकि-सिकुड़ि-सकुचि-घोंकचि
छोट भेल जाइत अछि,
मानवकेर चरण-धूलि
चन्ना मामाक चानि चढ़ल,
चिकरि जना रहल मानव मस्तिष्कक बल
मंगल पर कहुना अमंगल पहुँचि जाय
ताहि हेतु अन्तरिक्ष—यान सभ घुमैत अछि।
आइ विश्व-बन्धुताक भाव
सभक अन्तरमे
इजोड़ियाक चन्द्रमा समान बढ़ल जाइत अछि।
संसारक शक्तिमान, सम्पत्तिशाली सभ
देश आइ चाहि रहल
धरतीपर मनुज जाति
रहि न सकय भूखल ओ नाङ्ट, विपन्न,
किन्तु
ई सभ सिद्धान्त थीक,
सिद्धान्तक पालन तँ बुधियारक मण्डलमे
साफ कय बुड़ित्व नहि तँ
शुद्धता अवश्य थीक।

फलाँ-चिलाँ शुद्ध छथि
अर्थात् सुधंग छथि,
संसारक छौ पाँच किछुओ ने बूझल छनि,
गरजय से बरिसय नहि कहबी प्रसिद्ध अछि।
देखि लियऽ पूव दिशा लाल भेल जाइत अछि,
जल-थल-आकाश लाल
मानवकेर शोणितमे रङल
विश्व-बन्धुताक भाव सेहो भेल लाल
कालक तँ गाल लाल होयबे आवश्यक अछि।
सधने अछि चुप्पी संसारक ईमान-धर्म
सधने अछि चुप्पी सभ साधन-सम्पन्न देश
सधने अछि चुप्पी संयुक्त राष्ट्रसंघ तथा
हम छी चिचिआइत—
ई शरणार्थीकेर बाढ़ि
भारी समस्या अछि।
यैह जे समस्या से सिद्ध करय एक बात
युद्ध कोनो देशक घरैया बात रहल नहि,
साफ कय समस्या
मनुष्य नामधारी जीवमात्र हेतु
एक रंग घातक उपस्थित अछि।
युद्ध, युद्ध, युद्ध !
जाहि युद्धक भय मानवकेँ
कयने रहैछ त्रस्त, सैह ग्रस्त कयने अछि।
जागह हे बन्धु !
व्यर्थं भागह नहि युद्धभयेँ,
सृष्टिक समस्या केर अन्तिम समाधान
युद्धमात्र होयत,
बात गीरह ई बान्हि लैह।

Scanned by CamScanner

सम्मतक खोज

हम तँ बताहे छी, बतहू सब कहितो अछि,
किन्तु कतहु सम्मत क्यो नजरिमे न आयल अछि।
हमरा जनैत आब सृष्टिक नियन्तेकेँ
काँके पठयबाक अवसर तुलायल अछि।
एहन कथा बजलापर अपनहुँकेँ भय सकैछ
भ्रम हो जे सत्ते ई उन्माद-ग्रस्त अछि,
किन्तु बिना तर्कें जँ धारणा बनाय ली तँ
कहय पड़त अपनहुँकेर माथ अस्तव्यस्त अछि।
एक नहि, अनेक उदाहरण अपन मतक पुष्टि
हेतु सभक सोझाँमे प्रस्तुत करैत छी,
देखै' छी तखन कोना पानि परक तेलजकाँ
छेहलौ छी अथवा दम सधने ससरैत छी।
कहबालय शान्तिकेर ठिकेदार बनल कते
संसारक शक्तिमान देशक जननेता सभ
आपाद मस्तक छथि डूबल स्वार्थान्ध भेल,
ठाम-ठाम युद्धकेर बनला प्रणेता सभ।

सनकल वैज्ञानिक सभ धरतीकें ध्वस्तकरक –
हेतु सदा संहारक अस्त्र गढ़ैत छथि,
सनकल संसार खाधि खूनि बीच बाटेपर
अपने, आ दोष तकर आनपर मढ़ैत अछि ।
करता व्यापार ताहि सांघातिक अस्त्र सभक,
ताहीलय बाजारो तकने फिरैत छथि,
युद्धक उन्माद-रोग-ग्रस्त कते जन-नायक
डाइनि जकाँ अपन आँत अपने तिरैत छथि ।
खयबालय गोली आ पीबालय आत्म-ग्लानि
दीन तथा दुखियाकें मङनी बँटैत छथि,
भीतरसँ स्याह, मुदा ऊपरसँ ह्वाइट हाउस
केर शान्तिमन्त्र राष्ट्रसंघमे छँटैत छथि ।
की ई सभ काज कोनो सम्मत मस्तिष्कक थिक,
अथवा की शक्तिक उन्माद ग्रस्तकयने छनि,
कालकेर गालमे समौता की विश्वकें
लक्षण ई स्पष्ट टाङ पाछूसँ धयने छनि ?
स्वाधीनताक भूत चढ़लनि मुजीबोपर
मानि लेल, याहियाकें सत्ता अँटकौने छनि,
साधन-विहीन-देश बाङला निवासी सभ
केहन केहन योद्धाकें पथरी सटकौने छनि
जा' धरि बताहलोक होइछ नहि ता' धरि की
क्रूर भेल याहिया समान मन लगैत छै',
जा' धरि बताह लोक होइछ नहि ता' धरि की
माओत्से तुंगजकाँ अहं ई जगैत छै' ।
जन-नेता लोकनिक ई हाल उदाहरण भेल,
प्रकृतिकेर बतहपनी आँखिक समक्षे अछि,

जकरे भरोस राखि सृष्टिक ई चक्र चलल
सैह वायु आइ लोकहितमे विपक्षी अछि ।
देखूने पछबाकेँ बिसरि गेलै' पूब दिशा
पुरिबा से पच्छिम दिस दौड़ेमे लागल अछि,
धधकल छै' पूब दिशा ताहि ताप मध्य पड़ल
पच्छिममे बहुतो बुधियार आइ दागल अछि ।
चैतेमे धयलक से आसिन ठेकौलक आ
कहिया धरि बरिसत से क्यो ने जनैत अछि,
सनकल ई मेघ पानि झहराबय सदिखन तेँ
गंगा ओ यमुनामे छूरी फनकैत अछि ।
पुरिबो बताह आ बताहे ई मेघ ताहि
सँगहि बताह प्रकृतिकेर अंग-अंग अछि,
एते बताहाक चालि सभटा कुचालि देखि,
हम तँ छी दंग, मुदा दुनिआ ई तंग अछि ।



कृषक गीत

हम कृषक गबै छी गीत खेत खरिहानक हौ,
अछि अपना श्रमक भरोस आश भगवानक हौ।
हम मानि रहल छी अपनाकेँ कर्मक अधिकारी टा
कर्मक अधिकारी टा
हम जानि रहल छी दुनिञाकेँ बस फड़ मँहकारी टा
बस फड़ मँहकारी टा
हम श्रमिक न राखी लोभ कतहु सम्मानक हौ,
हम कृषक गबै' छी गीत खेत खरिहानक हौ।
लहलहा उठय ई बाधबोन बस हमर पसेनासँ
बस हमर पसेनासँ
थरथरा उठय ई घोर दरिद्रा कृषकक सेनासँ
बस कृषकक सेनासँ
हमही सेनानी हरित-क्रान्ति अभियानक हौ,
हम कृषक गबै' छी गीत खेत खरिहानक हौ।

धरतीक भूख नहि मेटा सकत चन्दापर गेला सँ
चन्दापर गेला सँ
अन्तरक मैल नहि धोआ सकत समता कहि देलासँ
समता कहि देलासँ
मिलि करह जोगाड़ सभक हित पान मखानक हौ,
हम कृषक गबै' छी गीत खेत खरिहानक हौ।
हमरा न प्रयोजन लोकमतक हम अपनहि मतदाता
हम अपनहि मतदाता
नव बाट देखाबथु हमरा केवल कृषि अनुसन्धाता
बस कृषि अनुसन्धाता
हम उठा कोदारि करब पुनि युद्ध भयानक हौ,
हम कृषक गबै' छी गीत खेत खरिहानक हौ।
राखी न लालसा अमरताक हम मर्त्यकवासी छी
हम मर्त्यक वासी छी
गृहमे रहितहुँ जँ पूछी तँ असली संन्यासी छी
असली संन्यासी छी
अछि छूतिमात्र नहि हमरामे अभिमानक हौ,
हम कृषक गबै' छी गीत खेत खरिहानक हौ।



आबह हे बन्धु !

लोके सभ करितो अछि
आ कहितो अछि लोके सभ—
आजुक परिवर्त्तनमे पहिलुक समाज-तन्त्र
नहू नहू क्रमहि क्रमहि टूटल चल जाइत अछि
अपनामे प्रेम, आत्मीयता ओ सौजन्यक
जे छल आधार-शिला सैह फुटल जाइत अछि
बाबा त' मासे मास अबिते छलाह गाम
काका बरखमा दिन, एखनहुँ अबैत छथि
भैयाकें, ड्यूटीसँ पलखतिओ होइत छनि
तैयो ने जानि कियेक आबि नहि पबैत छथि।
तीन बरख बीति गेलनि आबिए ने सकला अछि
पकलाहा आम भेल बाबी ने जानि कखन
तूबि जैत ततबो विचार नहि करैत छथि,
हाकरि छै' लागल जे बौआकें देखितिऐनि
बौआ से डुम्मरिकेर फूल भेल जाइत छथि।

बाबा जें एक बेर दुःखित पड़ि गेल छला
बाबीकें नगर जाय पड़ल छलनि बाध्य भऽ
काकी तँ अगहनमे आयल करैत छथि
खेतक किछु उपजा ओ बाड़ीकेर बखरा लऽ
गाम घरक लोक वेद, हित ओ अपेक्षितसँ
हिलमिलि पुरनायल सम्बन्धक सभ गर्दाकें
झाड़ि पोछि नम्रतासँ नवताकेर रंग चढ़ा
फेरो चल जाइत छथि।
भैयाकें कहियो जँ इच्छो ई होइत छनि--
'गाम कने' जैतहुँ'
तँ भौजीकेर सम्मति ओ पाबि ने सकैत छथि
भौजी कहैत छथिन—
गाम घरक आइ कालिह 'डर्टी एटमास्फेयर'
समटा पुरान चालि
नीक लोक हेतु गाम रहियो ने गेल अछि,
माटिमे लेटायत गऽ नेना ओ भुटका सभ
गाय बड़द महिस बीच कूदत ओ फानत गऽ
होयत संस्कार हीन
गारि दस हजार सीखि लेत बिना ट्यूटरक।
भैयासँ भौजी किछु बेसी 'अप-टू-डेट' छथि
आधुनिका कहबनि तँ
बिगड़तीह भीतरसँ
ऊपरसँ गुम्हड़िमात्र रहि जैती तखन,
मुदा कुन्नह सधौने बिनु रहती नहि जीवनः
हुनका तँ गामसँ
आ गाम भरिक लोकोसँ
घृणा छनि, असर्धा छनि

चर्चा जँ गामक क्यो लगमे करै' छनि तँ
कान मूनि पच्च दऽकऽ थूक फेकि दैत छथि
गाम घरक लोक मैल कपड़ा पहिरैत अछि,
घामकेर गन्धसँ तँ देहो महकैत छैक
गन्ध जेना फट्ट दऽकऽ नाकेमे पहुँचि जाइनि
तहिना तँ चट्ट दऽकऽ नाके मुनि लैत छथि।
गर्मीओ छुट्टीमे मासो दिन रहती से
बिजली पंखाक बिना
जिबिते घुरि सकती नहि।
एहि बीच कते एहन पोसल मनोरथ छनि
तकरे पुरौती गऽ दार्जिलिंग घूमि कऽ,
दमघोंटू वातावरण गामक
आ ततय जाय
जीवनक अमूल्य समय व्यर्थ की गमौती गऽ।
बदलि गेल युगक संग
बदलल अछि दृष्टिकोण
'हम दो हमारे दो' जीवनकेर परिधि भेल,
वसुधे कुटुम्ब कहियो कहने छल बुढ़बा सभ
तकरा उघैत रहब
मूर्खताक प्रमाण थीक।
ई सभ तँ मंच परक भाषणकेर भूषण थिक
अनका परतारऽ लय कहल करी जोरसँ,
देश ओ समाजक समुन्नति जँ चाही
तँ अपने अभ्युन्नतिमे भिड़ल रही भोरसँ।
नगरक विचार तन्तु क्षुद्रताक सीमा धरि
गाम घरक लोकहुँकेँ होइछ जे लपेटि लेत,

१०

पोछि लेत आँखिकेर कोरहुसँ काजर
आ बाजब तँ उनटे हुरकुच्चत हुरपेटि देत।
आँखिक जे देखल छल
सपना से भेल आइ
विश्वासो होयतौ' नहि आब नऽव तूरकेँ,
अछियो विवेकी तँ बैसल अछि कात भेल
भङ्ठी नहि कऽ सकैछ भङठल एहि सूरकेँ।
बसि कथ समाज बीच
एक अपन इज्जति लय
सौंसे समाजकेर नाक कटा मङनीमे
स्वार्थ नहि सधैत छल,
अनको प्रतिष्ठाकेँ गामक प्रतिष्ठा बुझि
तन-मन-धन रक्षालय सभ किछु लगबैत छल
आबि गेलै ककरो दरबज्जापर पाहुन तँ
सौंसे टोलबौया घी-दूध-दही-तीमन
ओ तरकारी घरघरसँ लयकय पहुँचौत छल,
अबै' छलै' भार दोर केरा चङेरे भरि
दहिओ मटकूड़े भरि,
तैयो उल्लास भरल ताहीमे पुरासुरा
बयनो बिलहैत छल,
मुदा आइ नगरकेर नवका संस्कार
एहि सभटा परम्पराक
जड़िए उखाड़ि रहल।
बिसरि गेल आत्मबोध,
कहिकय थिक रूढ़िवाद
खाधि खूनि ठामहिपर नीकोकेँ गाड़ि रहल।

किन्तु गाम घरक लोक
लालायित होइत अछि
भौतिकता पूर्ण ओहि नगरे दिस जयबालय
सुनह हे समाज !
घुरह गामे दिस, भारतकेर आत्माकेँ
शुद्ध ओ प्रबुद्ध रूप पयबालय
एखनहुँ विशाल हृदयवान लोक
गामहिमे भेटथुन
ई नगर ? शुद्ध तुच्छताक मूर्ति थिक।
ग्रामराज्य, रामराज्य अथवा कल्याणराज्य
नगरकेर कूटनीति सभसँ फराके रहि
फलीभूत भय सकैछ,
अन्यथा कदापि नहि।
छोड़ह, मृगतृष्णामे फँसबह नहि अपनाकेँ
सपना साकार करह अपने भरोस पर,
राखह विश्वास अपन बाहुबलक,
बुद्धिबलक, आशाकेँ टेकह
पुनि अपन देश कोस पर।
आबह हे बन्धु !
गीत गाँबह तों गाम घरक,
लाबह समुदाय मध्य चेतना समानताक,
सभकेँ जगाबह, डर मनसँ भगाबह
आ जोर कसि लगाबह
हो नाश दुःख दीनताक।

मैथिलीक उद्धार

झा, मिश्र, चौधरी, लाल, दास,
ठाकुर, मण्डल ओ सिंह गच्छे
छथि भेल उपस्थित सभामध्य
जनु आबि गेल हो पितर-पच्छ
कवि कोकिल जे जनलनि, सनलनि,
देसिल बयनामे धय तनलनि
आजुक युगधरि लऽ नाम हुनक
बहुतोकें पौ बारह बनलनि
अछि भारत भरिमे स्मृतिक पर्व
लुरिगर जन जा छेकथि आसन
सेवाक नामपर जा मेवा
कचरथि, सोन्हाय राखथि वासन
दू दशक बितल जहिया आयल
ई अपन देशमे अपन राज
देखू उठाय कऽ आँखि कने
अछि भेल कते मैथिलिक काज
भाषणक बेरमे हाथ पटकि
गरजथि, तरजथि आ करथि 'पोज'
काजक अवसरमे एकमात्र
पल्था लगाय कऽ खाथि भोज,
प्रस्ताव पास करबाक कालमे
हिला दैत छथि लालकिला!

आ दू ढेउआकेर लोभ लाभपर
जाइत छनि उत्साह बिला
उत्तीर्ण भेल शतशत बी०ए०एम०ए०
पीएच० डी० ओ डी० लिट्
जीवन गाड़ीमे घसल पेंच 'नट'
जकाँ किन्तु छथि सभ 'अनफिट'
जँ नाचि काछि, भरि तान मधुर
ई पर्व मना सुति रहब फेर
तँ बीतल वर्षक वर्ष व्यर्थ आ
उनहल जायत असल बेर
रामक समान न्यायी राजा
आ धयल मैथिली वनक शरण
लव-कुशकें देबय पड़ल छलनि
न्यायेक हेतु रण-आमन्त्रण
तँ की अन्यायक एहि राज्यमे
नाचि गाबि अधिकार लेब
लव-कुश ! जागू, उद्घोष करू—
रण हेतु माटि हम पठा देब
बिनु लोटहि जयवारीक भोज
खयबा लय उद्यत अधिक लोक
कय डँड़ाडोरिकें ढील, जमाइनि अर्क
पीबि प्रस्तुत कतोक
जानथि नहि ई जे यज्ञ मध्य
कर्त्तव्य अंश की हमर थीक
पाताल प्रवेशेसँ फेरो
उद्धार होयत की मैथिलीक ?

'स्लिप ऑफ पेन'

अपनो सभकें सुनल होयत जे
वर्षा बिनु छल पड़ल अकाल
इन्द्रपुरीमे नक्सलबाड़ी वला
कराय देलक हड़ताल
सरकारी घोषणा भेल छल
होयत उपाय एकर तत्काल
सत्य-अहिंसा फलाहार कय
कहुना खेपि लिअऽ ई साल
पाँच बरख धरि आरो जनता
रहओ खटैत बान्हि कऽ पेट
गाम गाममे बिजली लागत
खेत खेतमे पम्पिङ सेट
नहरि-छहरिसँ बान्हि पानिकें
चारू कात देत छिड़िआय
ने रौदीमे धीपत धरती
बहुत बाढ़िमे नहि भसिआय
गाम गाममे मुखिया सुखिया
ब्लौक ब्लौकमे बी० डी० ओ०
जनताकें बैसक नहि भेटय
नार पोआरक बीड़ीओ
दफ्तरमे सभ काज होयत जँ
रहत संग दसटकही नोट
नेता हेतु जोगा कय राखू
समय समय पर चन्दा, वोट'

तीन योजना पूरल वा नहि
लेलनि कर्ज माथ पर थोपि
पटना दिल्ली आइ रहल अछि
भोज बेरमे कुमहड़ रोपि
खाद पटा कय जोति कोड़ि कय
उपजा दै' छल जे गोवंश
राखि चुनावक चिह्न कराबथि
तकरे हत्या बनल नृशंस
सतसठिमे शठ सठले सभटा
सत् सठि गेल, आपसँ आप
किछु बचलाहा मध्यावधिके'
मानि रहल अछि अपने पाप
देश देशसँ छल आयल जे
भूख-पीड़ितक हेतु 'रिलीफ'
बँटने छला जाय निज हाथेँ
'चीफ' उठाय कते तकलीफ'
अमरीकी भऽ फुसिये बजला
टेलीवीजन पर हेंजेन
होटल बोतल वला बाततँ
साफ साफ छल 'स्लिपऑफ' पेन
नेता खण्डन करबे करितथि
अपन लगाय विचारक ब्रेन
पत्रकार पुछितनि, तँ कहितथि
स्लिप ऑफ पेन वा 'स्लिप ऑफ ब्रेन' ?

त्रिपदी

एक—

सौंसे अतीत जकर तीते व्यतीत भेलै
वर्त्तमान वर्त्तनमे गलिगलि खसैत अछि
से भविष्य केर पुनः मधुर कल्पनाक पाँक
मध्य पैर राखि जानि बूझिकय फँसैत अछि
जीवन केर बाट जकर पिच्छड़ रहलैक सदा
आनकें खसैत देखि सेहो हँसैत अछि
अयना लग ठाढ़ अपन टेटर नहि देखि सकय
अपने मुँहटेढ़ा मुँह अनकर दुसैत अछि।

दू—

कहिकय युगधर्म लाज-शर्म लोक तेजि रहल
जानय नहि मर्म आ मर्मज्ञ कहबैत अछि
खत्तामे गुड़कुनिआ गैंचीलय मारय से
अनका सिमरिया धरि सोझे नहबैत अछि
एक घोंट पानि हेतु बाप जकर मुइलथिन से
प्रितरपच्छ पाबि पितृलोककें दहबैत अछि
अनका भूदान केर महिमा सुनाबय आ
अपने शमशान ब्रह्मथानों ढहबैत अछि

तीन—

शासन बेरोक अनुशासन-विहीन लोक
भारतीय संस्कृति शीर्षासन करैत अछि
रासन पर जाहि ठाम जनता जीबैत रहय
भाषण पर ताहि ठाम उचिते मरैत अछि
वासन हो पैघ आ सिंहासन दुरुस्त रहय
ताही लय डारि पात सभ दल धरैत अछि
फाँटि पर चढ़ैत कते गोटी उफाँटि मुइल
सुधुआ पछड़ैत तथा बुधुआ ससरैत अछि।

नवयुगक स्वर

नूतन स्वर मे नवयुगक गीत
के गाबि रहल अछि, कान दिऔ',
अपना भाषामे मधुर भाव
की आबि रहल अछि ध्यान दिऔ'।
जननीक मुहें अस्पष्ट स्वरें किछु
सिखलहुँ, नहि अछि मोन आब,
भय गेल पाँखि, उड़ि गेलहुँ दूर
तँ रहत प्रयोजन कोन आब।
अस्तित्व निहित अछि जाही मे
तकरे जड़ि पर कुड़हरि बजरल,
अलसायल आँखि कंने फोलू
फूसक घर पर चिनगी पजरल।
उजड़ल घर बसल, पुनः उजड़ल
जाइत अछि, जड़ताकें त्यागू,
पुरुषत्वक राखि भरोस अपन
उठि आउ, चलू आगू-आगू।
पड़ि जाइ काज प्राणक कदाच
पुलकित भय जीवन-दान दिऔ',
नूतन स्वर मे नवयुगक गीत
के गाबि रहलअछि, कान दिऔ'।

विवेकक श्राद्ध

हम सब जेहिमे जन्म लेल अछि
ताहि युगक किछु चित्र देखि ली,
जे कहबथि राष्ट्रक निर्माता
तनिक पवित्र चरित्र देखि ली।
नवताकेर उज्ज्वल प्रकाश मे
आइ विवेकक श्राद्ध अनुष्ठित,
दय गरदनिआ आइ ज्ञानकेँ
आसनपर विज्ञान प्रतिष्ठित।

नवतुरिया

सावधान ! हमरासँ हटले रहू
थिकहुँ हम सब नवतुरिया,
घोरिदेब हम हवा-पानिमे
चुप्पेचाप जहरकेर पुड़िया
अछि जिजीविषा, मुदा युयुत्सा
अन्तर्मनमे मारि करै' ए
कुण्ठा ओ सन्त्रास-ग्रस्त छी,
बुद्धि हमर बपहारि कटै' ए।

व्यवस्था

छोट-पैघ वा जाति-भेद सब
रेखा मानव-कृत अछि खीचल
एक वर्ग चढ़ि गेल माथ पर
अपर पैर तर रहले पीचल।
तामल खेतक सदृश समाजक
ऊंच नीच सम्पूर्ण व्यवस्था,
चिर्री चोत भेल कपड़ा सन
देखि रहल छी सभक अवस्था।

प्रगतिशीलता

दया-कृपा-करुणा ई सब किछु
सड़ल, पुरातन थिक परम्परा,
प्रगतिशीलताकेर नाम पर
आइ मनुजता रहल थरथरा।
लाज-धाख रखइत छी ककरो ?
तँ भीतरसँ अहाँ फोंक छी,
माय-बापकेर कहल करै' छी ?
टहल करै'छी ? बूड़ि लोक छी।

बुधियारी

सड़क-महल-पुल बनतै' पाछाँ,
पहिने पास कराय लिअऽ बिल,
फूसि बजै' छी ? नीक करै' छी,
एहने लोक कहाबय काबिल।
लय कय सत्यक नाम, फूसि
बजलासँ कोनो दोष न होइ' छै
कहिते छै' वैमान लोक, तेँ
बुधियरबाकेँ रोष न होइ' छै।

●

नैतिकता

नैतिकताकेर ह्रासक चर्चा
सभा-समितिमे होइ छै' एहिना,
लसकल गोटी लाल होइत हो,
नहि ताकी पुनि वामा-दहिना।
घड़ुछा लटकल देखि झोंझमे
सत्ताकेर लगाबी लग्गी,
होइत रहओ पेट्रोल महग,
हम अपन चलायब पुरने बग्गी।

●

तथाकथित प्रयोगवादीक प्रति

हे भविष्य-द्रष्टा, युग-स्रष्टा महाकवे !
कहि लिअऽ अहाँ अपनाकेँ स्वयम्भूः
आ बना लिअऽ नवके विधान
नव ताल-छन्द–गति-यति-लय सब,
तोड़ पुरना सब छान्ह-बान्ह,
अपना भाषामे अहाँ आइसँ आलूकेँ कहिऔं' केरा,
छौंकले भातमे ढारि चाह, बिस्कुटक बना चटनी
अंगूरक पापड़ सँगेँ सँघड़ि जाउ
जँ थीक महिंस अपने अहाँक
ताँ कुड़हरिएसँ नाथि लिअऽ
जे मूर्ख होयत से टोक देत,
बुझनिक तँ बूझत अहाँ स्वयं छी कलाकार,
ब्रह्माक कृपेँ अन्तरक आँखिमे
जन्मेसँ लागल आयल अद्भुत चश्मा।
कानक कोल्हकीमे अँतरक फाहा रखनिहारकेँ
कहि पुरान, जँ अहाँ ठोरतर कय राखी —
तँ राखि लिअऽ।
जेँ आदिकाल सँ मनुज जाति खयबाक हेतु
मुँहसँ लेलक अछि काज, अतः
हे नूतनताक उपासक ! तकरा बदलि अहाँ
नाके दऽ सुरकी दालि-भात तँ सुरुकि लिअऽ,
तेँ अनका की, अपने सरकत।

मस्तक पहिरथि आन पाग
तेँ अहाँ पैरमे पहिरि चलू,
फूलक माला बहुतो दिनसँ पहिरैत रहल अछि
ई मनुक्ख, थिक अन्ध जाति,
जे परम्पराक पकड़ि नाङड़ि
एखनहुँ धरि चलिते - आयल अछि
तकरासँ रहि कोसो फराक,
छोटको घोंघीक बनाय हार जँ पहिरि चली
तँ चलू, आन के की बाजत।
साहित्य मुदा व्यक्तिक बलपर नहि चलि सकैछ,
छाहरितर जनमल घास ओलरि नहि बढ़ि सकैछ
ओकरा चाही सौंसे समाज-सूर्यक आतप
पवनक आलिंगन,
जलक मधुर संस्पर्श' तथा बसुधाक कोर,
षड् ऋतुक फराके छौबो रस।
अपना रुचिसँ भानस बनाय,
भरि गाम नोति जँ खोआ देबौ'
तँ सुयशक बदला अयश होयत।
तेँ जँ समाजकेँ परसबाक किछु इच्छा हो
ताँ अपना रुचिकेँ दाबि,
अहाँ जन-रुचिसँ परिचय प्राप्त करू।
जँ अछि नवीनता-भूत माथपर ठाढ़ भेल
ताँ जे फुरैछ से बाजि लिअऽ
अनका नहि पलखति छैक एते जे पढ़ि सकते,
जे जे फुरैछ से गाबि लिअऽ
अनका नहि छुट्टी छैक एते जे सुनि सकते।

अभियान

थिक हमर धीरताकेर प्रतीक हिमालय,
उज्ज्वलता भारतवर्षक थीक हिमालय,
गौरी-गङ्गाक जनक, पालक, देवात्मा,
अति उच्च-सभ्यताकेर प्रतीक हिमालय।
हिम सदृश स्वच्छ हृदयक हम भारतवासी,
हिम सम शीतल भावक सबदिन प्रत्याशी,
हमरे घर ज्ञानक प्रथम रश्मि चमकल छल,
हम रहितहु अति प्रतिकूल प्रवाह न भासी।
अभियान चलौत रहल अछि ज्ञान प्रचारक,
निर्माण चलौत रहल अछि उच्च विचारक,
आह्वान चलौत रहल अछि सत्यादर्शक,
सम्मान करैत रहल छी शिष्टाचारक।
अछि किन्तु शस्त्र ओ शास्त्र समाने अधिगत,
इतिहास परशुरामक अछि सबकें अवगत,
योगक बल जल-थल-नभ सबतरि सम रूपें
गति बनल रहल अछि हमर सदा अप्रतिहत।
अभियान करक अछि आइ शक्ति-सँचय हित,
अभियान हमर सत्पथ पर दृढ़ निश्चय हित,
दानवताकें निर्मूल करय भूतलसँ
अभियान हमर ई निज शक्तिक परिचय हित।

उद्‌बोधन

हम नवीन ज्योति पाबि
कीं न अनवधान छी,
पूर्ण सावधान छी?
विहुँसि उठल गगन ससरि गेल कालिमा,
पसरि गेल अमर-ज्योतिकेर लालिमा,
ताहि ज्योति मध्य कहू
की विकासमान छी,
जी, प्रकाशमान छी।
रचनात्मक पथपर नहि पैर देब जँ,
अन्तरात्माक संग बैर लेब तँ,
सत्यक आधार केर
की प्रबल प्रमाण छी,
सेद्य निर्माण छी।
केवल अधिकारे धरि चीन्हि लेब जँ
आलस्ये विषधर बनि बान्हि लेत तँ,
भाइभाइ अपन थिकहुँ
क्यो न आब आन छी?
आब क्यो न आन छी।
जागू हे राष्ट्रपुत्र! शक्ति-पुत्र भय,
रचू सुमनमाल्य एकताक सूत्र लय,
भूमि हमर प्राण, भूमि—
केर हमहुँ प्राण छी?
प्राणहिक समान छी।

सङ्कल्प

सर्जन सुन्दर संसार करब।
जीवन-वनमे दावानल रूपी
दानवदल संहार करब,
वसुधापर वसु ओ सुधा—
केर वर्षा हम मूसलधार करब।

विष-कुम्भ पयोमुख बनि दुर्मुख
लधने दुखपर दुख अछि सम्मुख,
विकराल अकालक भयें त्रस्त
मरबा लय बहुतो अछि उन्मुख,
यमराजहुसँ लड़ि जायब आ
यमपुरक बन्द हम द्वार करब।

जे पर-पीड़ा नहि जानि सकय,
अनका दुखमे नहि कानि सकय
दम्भेँ मातल, अपना सुख लय
अन्यायक बल पर फानि सकय,
तकरापर कठिन कृपाण उठा कय
निश्चय लाल कपार करब।

मुख-मलिन, हृदय थरथर कपैत,
प्रतिपल नोरें लोचन झँपैत,
अन्तरक आगिमे झरकि-झरकि
दाताक नाम निशि-दिन जपैत
जे काटि रहल दुखसँ जीवन
हम तकरे बेड़ा पार करब।

घट फोड़ि विषक, पट चीरि-फाड़ि,
अन्यायक गृहकें डाहि-जारि,
प्रलयक नित नूतन दृश्य र ।
हम प्रबल विपक्षीकें पछाड़ि
भूपर, ऊपर वक्षस्थलपर
भुज-दण्डक विकट प्रहार करब।

नन्दन वन सन शोभन सुसघन
छायाक संग अति शीत पवन
मधु-मादकतें मद-मत्त बनल
सिहकत अनुखन लय मृदु-कम्पन
जनताक प्राण आप्यायित कय
हम विशद विपत्तिक भार हरब।

तुलसीक प्रति

हे बृद्ध तपस्वी !

हृदय अहाँक पखारल छल गङ्गाजलसँ
तेँ गङ्गाजलक समान परम पावन, निर्मल,
कल-कल करैत प्रतिपल अविकल
बहि गेल काव्य-धारा अजस्र
अन्तरक हिमालयसँ शीतल,
बीतल युग-युग, नहि शीतलताक लता मुरझल,
दिन-दिन फुलाय ओ फड़य
स्वादु, सुमधुर, सौरभसँ भरल-पुरल।

हे भक्तिक अवतार !

कयल की कठिन साधना, वैदेहीपति-चरण-अर्चना,
जानकीक पद-कमल बसल जा मन-मधुकर
मधु पीबि कयल जे रस-संचय
से करय नाश भव-ताप, त्रिविध हृदयक संशय।

हे ज्ञानबृद्ध !

की सभ नहि कयलहुँ परित्याग,
रामक, अवतार पुरुषक रामक, निर्मल चरित्र
लय गेल खीचि मन कोन हेतु जे फुरल अहाँकेँ रामायण ?
अछि सृष्टि एतेक विशाल
दृष्टि नहि पड़ल आन ठाँ कोन हेतु।
रामक जीवनमे दुखपर दुख अबिते रहलनि
सहिते गेलाह, उद्विग्न-चित्त मर्यादाकेर
कयलनि नहि कहिओ उल्लंघन।

की सहय पड़ल नहि दुख दारुण जीवनक
अहाँकेँ घुलि घुलि कय ।
तेँ पिघलि हृदय बनि गेल स्रोत
जे कयलक जगकेँ ओतप्रोत
जीवन-पथपर जहिया जे आयल शिलाखण्ड
तकरा निर्मम भय फोड़ि फाड़ि, बहि चलल
रामनामक सरिता, कविताक रूपमे अन्तरसँ ।

हे भविष्यकेँ स्पष्ट रूपसँ देखनिहार !
कर-बद्ध गिरा
संस्कृत-वाङ्मय जगतक निगूढ़तम भाव
लोक-भाषाक भूमिपर आनि, देल जे ज्ञान-चक्षु
ताहीसँ चिन्तन कयल,
लहरिकय उमड़ल सिन्धु अगाध
बुद्धि-गिरिसँ से मन्थन कयल,
ताहिमे पौलहुँ जे किछु रत्न
आनि से मानसमे छिटि देल
भविष्यक पथपर बढ़ल प्रकाश
मनुजता कयलक पाबि विकास ।

हे सूत्रधार नवयुवक, धन्य !
कयलक भविष्यवाणी अहाँकवाणी,
वीणक हिलि गेल तार
ध्वनिसँ झंकृत अछि दिग्दिगन्त
अपनेक चरणमे कोटि-कोटि अछि नमस्कार ।

कहू कुशल

जकरासँ जेम्हरे भेंट होइछ
से सब पुछैत अछि—'कहू कुशल' !
बुझना जाइत अछि जेना—
एहि युगसँ ई स्वयम् अपरिचित हो।
एकरा करेजमे नहि लगैत छै' युगक धाह ?
एकरा न खबरि छै आइ मानवक द्वारें मानव अछि तबाह ?
ई नहि जनैछ जे पाखण्डीक हृदय होइत छै' केहन स्याह;
नहि एकर कान सुनि सकलै' अछि
जग-विध्वंसक विस्फोट सदृश
अग्नि-स्फुलिंग सन तेज
करोड़ो पद-दलितक करुणार्द्र आह ?
एखनहुँ धरि जीवन-पथक गरल कण्ठक नीचाँ नहि जा सकलै'
एखनहुँ धरि एकरा हृदय-कुहरमे
मानवता न समा सकलै'
चलिते-चलिते पिच्छड़ पथपर
प्रायः कहिओ ई नहि हूसल,
तें ने पुछैत अछि कहू कुशल ?
जकरामे कनिओ छैक चेतना लेशमात्र,
से नहि जनैत अछि सुख, जनैत अछि क्लेश मात्र,
खाली पहिनेसँ छलै' घैल दूधक,
परन्तु खाली छै' सम्प्रति छोट छीन जलपात्र मात्र
सौंसे जीवन सोझाँमे पड़ल पहाड़ जकाँ
तनमे हड्डीकेर छैक बचल अवशेष मात्र,
की कहियो क्षुधा-पिपासावश
तृष्णावश, घृणा-निराशावश
कय कुत्सित कर्म, तखन अपने अन्तरसँ

गेल न अछि धूसल
तें ने पुछै त अछि कहू कुशल ?
हमरा तँ बुझना जाइछ जे ई हमर देश
हड़बड़मे जे किछु पौलक अछि
तकरासँ बीस गुना बेसी मङनीमे जाय गमौलक अछि।
युग बाजी लगा बढ़ल पथपर
पहिने जे जाय मनुजताकें धकिया कय
नीचाँ खसा सकत, से बैसत जा स्वर्णक रथपर,
सब घूमि रहल 'इति' लग सरिपहुँ
आ बूझि रहल अछि—'छी 'अथ' पर।
ककरा कहबै,' के कान देत,
अनकालय के बलिदान देत,
एसगर दोसगर मे जँ पौलक तँ चूसिलेत शोणित समेत
एकरा ई सब नहि छैक पता सब थिक पिशाच सब थीक प्रेत ?
छथि जखन विधाता धरि रूसल
तँ की पुछैत अछि कहू कुशल।
ई जीवन थिक बड़का जहाज,
जकरा ओइपार लगयबामे कोइला पानिक पड़तैक काज
अन्हड़-बिहाड़िमे संग देत
से सम्मुख अछि आन्हर समाज
स्वार्थक ज्वाला धुधुआय रहल तँ ककर पुछारी के करतै'
अपनासँ छुट्टी छैकेनें ओ आनक हाथ कोना धरतै'
जनिका मुट्ठीमे सत्ता छनि
तनिका कर शोभित छनि मूसल
ओ नहि पुछैत छथि कहू कुशल,
जकरासँ जेम्हरे भेंट होइछ
से सब पुछैत अछि कहू कुशल।

प्रयोजन

आइ राष्ट्रकें पड़ल प्रयोजन
तपः पूत किछु नेता चाही
सत्साहित्य प्रणेता चाही
शत्रुसैन्य दल मथनकरक हित
भीष्म समान विजेता चाही

दिव्यदृष्टि व्याख्याता चाही
मन्त्रतत्त्व उद्गाता चाही
दलित पतित हित त्राता चाही
सत्यक अनुसन्धाता चाही

व्याप्त सकल दुख हर्त्ता चाही
देशक कर्त्ता धर्त्ता चाही
शिवि दधीचि कर्णक दानक
प केर पुनः अनुसर्त्ता चाही

मानवीयगुण श्रोता चाही
सद्विचार प्रस्तोता चाही
ज्ञान अग्निमे मनोविकारक
हवन करक हित होता चाही

जागरूकता दैनिक चाही
सभ बलिदानी सैनिक चाही
ठाम - ठामपर खीमा चाही
सतत सुरक्षित सीमा चाही

सागरमे पनिडुब्बी चाही
शत्रुक दललय कुब्बी चाही
पछिमा चाही, पूबा चाही
सतत बनल मनसूबा चाही

तोपक मुहमे गोला चाही
कवच - कुण्डली चोला चाही
किछु विमान बम वर्षक चाही
राष्ट्रनीति आकर्षक चाही

सदाश्रमी सभ कर्षक चाही
गौरव भारत वर्षक चाही
दृढ़ साहस संघर्षक चाही
फ़ुज़ल बाट निष्कर्षक चाही

राष्ट्र विरोधी नाथल चाही,
सभ वंशीमे गाँथल चाही
बनल रहय आन्तरिक एकता,
हो संगहि परिवार नियोजन

आइ राष्ट्रकेँ यैह प्रयोजन



मातृ-स्तुति

सब कहैत अछि थिक अनित्य ई मायामय संसार,
वेद-पुराण सकल सद्ग्रन्थक सम्मत एक विचार।
जीव थिका कर्मक अधिकारी फलक न राखथु ध्यान,
गीतामे अपने कहने छथि योगेश्वर भगवान।
किन्तु जीव भय मोह-विवश छन-छन पर से बिसरैछ,
जाहि कारणें मोह-पङ्कमे अपनहि जाय फँसैछ।
धन्य विधाता, रचलनि भूपर पावन मानव-वंश,
पञ्चतत्त्वमे पुनि मिलि जाइछ पाँचो तत्त्वक अंश।
आत्मा थिका नित्य, सत्कर्में ओ पाबथि विश्राम,
उदाहरणहित अपन देशमे भेटत शत-शत नाम।
पथ प्रशस्त कय सकइछ केवल आत्म-गुणक आलोक,
जाहि प्रकाशित पथपर चलइत रहइछ मानव-लोक।
किन्तु ताहिलय चाही पहिनें अपन स्वरूपक ज्ञान,
अन्तर्हित छथि जाहिमध्य ओ तेज-पुञ्ज भगवान।
थिक शरीर आवास मात्र, पुनि तकरासँ की मोह,
एक किरण कथमपि नहि करइछ अपर किरणसँ द्रोह।
अन्तकालमे क्षुद्रजीव भय आत्म-तत्त्वमे लीन,
परमात्माक विराट रूपमे होइछ जाय विलीन।

ई नहि तर्कक विषय थीक, अछि शास्त्र-पुराण प्रमाण,
आत्मा ज्ञानक संबलपर पबइत छथि पद निर्वाण।
कर्म थिक सर्वार्थ-सिद्धि-हित अनुपम साधन, युक्ति,
कर्मलोकमे राग-द्वेषसँ पबइत छथि सब मुक्ति।
चिन्तनशील एक ई प्राणी रखइत अछि जिज्ञासा,
के थिकाह ओ जगन्नियन्ता, की तनिकर परिभाषा।
ममतामयी हमर माताकेँ कर्मक छलनि भरोस,
जीवनभरि रहि कर्म-निरत, नहि देल भाग्यकेँ दोष।
महाप्रयाणक समयहुमे दय कर्मक शुभ आदेश,
त्यागल तन, नहि शेष रहल मोहक वा क्लेशक लेश।
नेत्र निमीलित भेलनि शून्यमे, पहुँचल भक्ति-विमान,
उत्तराभिमुख कय शरीरकेँ कयल स्वयं प्रस्थान।
जीवनभरि पातिव्रत धर्मक सबकेँ शिक्षा देल,
बालहुसँ यदि भेटि सकल तँ ज्ञानक भिक्षा लेल।
मुक्तिनाथ-पद सेवल यत्नेँ पौलनि अनुपम मुक्ति,
भय प्रसन्न तन अंक लगौलनि जननी-भूमि त्रिभुक्ति।
जनकि शिष्य उपशिष्येँ घरघर मिथिला माता धन्या,
अमर, गणेश जनिक दुइ सुत आ अन्नपूर्णा कन्या।
अम्बक ऋणसँ उबरि सकब यदि जन्म-भूमिकेँ सेवब,
हुनकेलय आदर्श, उदधिमे जीवन-नौका खेवब।
बिसरत नहि जीवनभरि हुनकर 'बतहू' पदक सिनेह,
ताबतधरि सुमिरब जाबतधरि रहत बचल ई देह।

अन्य प्रकाशित रचना

कविता

१	गुदगुदी	·७५
२	युगचक्र	·५० अप्राप्य
३	ऋतु प्रिया	२·००
४	उनटा पाल	१·५०

एकांकी

५	समाधान	·५०

उपन्यास

६	वीर कन्या	१·०० अप्राप्य
७	विदागरी	३·५०

कथा

८	जल समाधि	१·५०

निबंध

९	मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण	२·५० अप्राप्य
१०	मैथिली साहित्य परिषद्क इतिहास	१·५०

विविध

११	त्रिफला	·५०
१२	मुहावरा ओ लोकोक्ति	

मैथिली ग्रन्थमाला कार्यालय, मिश्रटोला (दरभंगा)